इल्ज़ाम तुम्हारे
दलाईल हमारे
सहीह बुखारी
सहीह मुस्लिम
सुनन अबूदाउद
सुनन निसाई
जामे तिर्मिज़ी
सुनन इब्नेमाजा
तालिफ
मुहम्मद रईस कुरैशी
पेशकर्दा
मुहम्मद मोहसिन मेम
मर्कज़ दअवतुल हक़
गांधी नगर, उज्जैन

इल्जाम तुम्हारे
दलाईल हमारे

तरतीब

शैख मुहम्मद रईस कुरैशी

नजरे सानी

मौलाना शैख़ अब्दुल अल्लाम मज़ाहिरी
मौलाना शैख अब्दुल सत्तार सिराजी

प्रुफ रिडींग

शहाबुद्दीन फारूक़ी धारणी

मर्कज़ दअ्वतुल हक़

मस्जिद दारूस्सलाम, गांधीनगर, उज्जैन

फेहरिस्त

अर्ज़े मुरत्तिब

अल्लाह तआला के लिये है तमाम तअरीफें, दरूद व सलाम हो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर, रहमतें हों आपकी आल व साथियों पर, इसके बाद।

अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से पिछले कुछ सालों से मुल्क के कोने कोने में लोग किताब व सुन्नत की इत्तेबा की तरफ रागि़ब हो रहे हैं। जिसका नतीजा यह निकला कि उर्दू के अलावा दूसरी ज़बानों में दीनी किताबों की ज़रूरत महसूस होने लगी। ख़ासतौर से हिन्दी ज़बान में। हिन्दी ज़बान में लिटरेचर तो बहुत है मगर कुरआन व हदीस की रौशनी मे लिखा गया लिटरेचर बहुत ही कम मिलता है। इसके पेशे नज़र कई साहबे फ़िक्र ने इस पर अपनी अपनी सलाहियत के हिसाब से काम किया अल्लाह तआला सबको अज्र से नवाज़े। लेकिन यह कोशिश नाकाफी है। इसी कमी को पूरा करने के लिए हम लोग भी अपनी सलाहियत से कोशिश कर रहे है। इसी कोशिश के तहत इस किताब को मुरत्तिब किया गया है।

इस किताब को मुरत्तिब करने का मक़सद यह है कि लोग सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल के मुताबिक़ अमल करने वाले बने। क्योंकि जब हम हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुताअला करते हैं तो हमारे सामने कई हदीसें आती हैं लेकिन अक्सर लोग उस पर ग़ौर नहीं करते। हम आपके सामने चन्द हदीसें पेश कर रहे हैं आप इन पर गौर करेगें तो पाएंगे कि हदीसे रसूल का मक़ाम क्या है और उम्मत किस तरफ जा रही है।

जान बूझ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत से मूँह फेरने वाले मुसलमान की सज़ा

अल्लाह तआला का फरमान हैः-

"रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हुक्म की ख़िलाफवर्ज़ी करने वालों को डरना चाहिए कि वह किसी फिले में गिरफ्तार न हो जाऐं या उन पर दर्दनाक अज़ाब न आ जाए।"(सूरह नूर 63)

सय्यदना उरवाह बिन ज़ुबैर रज़ि. बयान करते हैं कि :-

"उनके वालिद सय्यदना ज़ुबेर रज़ि. और एक अन्सारी (साबित बिन क़ैस रज़ि) के दरम्यान मक़ामे हर्रा की एक नाली के बारे में झगड़ा हो गया (कि उससे कौन

अपने बाग़ को पहले सीचने का हक़ रखता है) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ज़ुबैर पहले तुम अपने बाग़ को पानी दो फिर अपने पड़ोसी के लिए पानी छोड़ देना। इस पर उस अन्सारी सहाबी ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! यह फैसला इसलिए है कि ज़ुबैर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फुफी ज़ाद भाई है। यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरा मुबारक का रंग बदल गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "ज़ुबैर! अपने बाग (खेत) को पानी पिलाओ, फिर पानी रोक रखो, जब वह मेड़ तक पहुँच जाए तो फिर उसके लिए पानी छोड़ दो। (पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्सारी के साथ रिआयत की थी मगर) अन्सारी की इस बात के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ुबैर रज़ि. को उनका पूरा हक़ दे दिया क्योंकि इस झगड़े का सरीह फैसला यही था। जबकि पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दोनों के लिए एक ऐसी राह की निशान दही की थी जो दोनों के हक़ में थी। ज़ुबैर रज़ि. फरमाते हैं कि मैं समझता हुँ कि यह आयत उसी सिलसिले में नाज़िल हुई थीः-

"(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे रब की क़सम! लोग कभी मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि आपस के तमाम इख़्तिलाफात में आपको हाकिम न मान लें फिर जो फैसला आप उनमें कर दें, उस पर अपने दिलों में यह कोई तंगी महसूस न करें बल्कि फरमाबरदारी के साथ उसे तस्लीम कर लें।" (सूरह निसा 65) (सहीह बुख़ारी, 4585)

इस वाक़िये से मालूम हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस, सुन्नत और फैसले के मुक़ाबले में हम किसी चीज़ को तरजीह न दें, हत्ता कि उसके बारे में किसी क़िस्म की बदगुमानी भी पैदा न करें बल्कि दिल व जान के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात को तस्लीम कर लें।

यह वाक़िया अगरचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यबा में पेश आया मगर इसमें ऊसूली तौर पर जो बात कह दी गई, वह क़यामत तक के लिए है और वह यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो हुक्म और इरशाद फरमाएं उससे मूहँ नहीं मोड़ना चाहिए बल्कि उससे मूहँ मोड़ना ईमान से मूहँ मोड़ना है।

हिदायत का मेयार सिर्फ कुरआन व सुन्नत है

सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "मैं तुम्हारे अन्दर दो ऐसी चिज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ कि अगर तुम उन पर अमल करोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे, एक अल्लाह की किताब है और दूसरी मेरी सुन्नत है।" (सहीह जामे उस्सगीर, लिलअलबानी 2934)

यानी सहीह हिदायत भी सिर्फ कुरआन व हदीस से मिलेगी किसी और चीज़ से नहीं, हम अगर ग़ौर करें कि अल्लाह तआला ने हर आदमी को दो हाथ दिए हैं, एक हाथ से कुरआन व दूसरे हाथ से सुन्नत पकड़ ले तो कभी भी गुमराह नहीं होगा। इससे यह बात भी साबित होती है कि कुरआन हदीस में हर वह बात मौजूद है जिससे अल्लाह की रज़ा हासिल हो, नहीं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़रूर तीसरी बात का ज़िक्र करते।

यहाँ पर इस बात को भी ज़हन नशीन रखें कि कुरआन व हदीस ने जिनको हुज्जत बताया है वह भी हुज्जत है यानी सलफ का फहम और सहीह क़यास। क्योंकि जो शख्स कुरआन व हदीस को माने और कुरआन व हदीस में मौजूद हुक्म को न माने वह किस तरह मोमिन हो सकता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत दर हक़ीकत अल्लाह की इताअत है

सय्यदना अबु हुरैरह रज़ि बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जिसने मेरी इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने मेरी नाफरमानी की, उसने अल्लाह की नाफरमानी की।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारत, ह.-1835)

इसलिए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहैसियत नबी जो कुछ कहा और फरमाया वह सब अल्लाह की तरफ से दीन था। और दीन की पैरवी गोया अल्लाह की पैरवी है और उसकी मुख़ालफत भी अल्लाह ही की नाफरमानी है।

सुन्नत का इल्म हो जाने के बावजूद उससे मूहँ मोड़ना नाफरमानी है

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान में फतह मक्का वाले साल मक्का की तरफ रवाना हुए। आपने रोज़ा

रख लिया लेकिन जब 'कराअलगमीम' मक़ाम पर पहुँचे तो लोगों ने भी रोज़ा रख लिया। आपने पानी का एक प्याला मंगवाया और उसे ऊँचा किया यहाँ तक कि तमाम लोगों ने उसे देख लिया तो आपने पानी पी लिया। इसके बाद आपको बताया गया कि कुछ लोगों ने अभी रोज़ा रखा हुआ है तो आपने दो मर्तबा फरमाया "यह लोग नाफरमान हैं।"(मुस्लिम 1114)

रोज़ा अल्लाह की रज़ा के लिए अल्लाह के हुक्म से रखा जाता हैं उसके बावजूद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा न अपनाया गया तो आपने उन्हें नाफरमान कहा वह लोग आम लोग नहीं थे आपके सहाबा थे। उनके के बारे में आपने फरमाया "यह लोग नाफरमान हैं" तो हमें सोचना चाहिए कि हम में उन लोगों का क्या हाल होगा जो औरो की बात मानने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों को छोड़ देते हैं। क्या यह लोग नाफरमान नहीं होंगे।

इताअते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मूहँ मोड़ने वाला जन्नत में जाने से खुद ही इन्कार कर रहा है!

सय्यदना अबु हुरैरह रज़ि. बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "मेरी उम्मत के सारे लोग जन्नत में जाएंगे सिवाए उन लोगों के जिन्होंने जन्नत में जाने से इन्कार किया।" सहाबा किराम रज़ि. ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जन्नत में जाने से कौन इन्कार करेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में दाख़िल होगा और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने (जन्नत में जाने से) इन्कार किया।" (सहीह बुख़ारी 7280)

मालूम हुआ कि जन्नत में जाने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताये हुए तरीक़े की इत्तेबा ज़रूरी है और जो आप की इताअत व इत्तेबा नहीं करता वह गोया जन्नत में जाने से खुद ही इन्कार कर रहा है। अल्लाह हम सबको अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत व इत्तेबा की तौफीक़ अता फरमाए, आमीन!

यहा एक बात और ग़ौर करने है कि आपने जन्नत का इन्कारी उसे नहीं बताया जो किसी उम्मती के क़ौल व अमल का इन्कार करे जैसे कि आज उम्मत में इस बात को फैलाया जा रहा है कि पीरों व मोलवियों की बात को मानो, और जो नहीं

माने उसे गुमराह और ना जाने क्या क्या कहते है। अल्लाह ऐसे लोगों से उम्मत की हिफ़ाज़त करे और सहीह दीन की तौफिक़ अता फरमाए, आमीन!

हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़ाबले में किसी का क़ौल हुज्जत नहीं

सय्यदना जाबिर रज़ि. से मरवी है कि सय्यदना उमर रज़ि. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हम यहूदियों से (उनके दीन की) बातें सुनते हैं, जो हमें अच्छी लगती हैं, अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इजाज़त दें तो हम उनकी बअज़ बातें लिख लिया करें? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''क्या तुम (अपने दीन के साथ) इस तरह लापरवाही करना चाहते हो जिस तरह यहूदी व नसारा ने (अपने दीन के बारे में) लापरवाही का इज़हार किया था? जबकि मैं तुम्हारे पास एक वाज़ेह और साफ सुथरी शरीअत ले कर आया हूँ। अगर आज मूसा अलैहि. भी ज़िन्दा होते तो मेरी पैरवी किए बग़ैर उनके लिए भी कोई चारा नहीं होता।''(मुसनद अहमद जि. 3 स. 83)

नीचे लिखी हदीस में यही बात ज़्यादा तफसील से बयान हुई है:

सय्यदना जाबिर रज़ि. से रिवायत है कि एक मर्तबा सय्यदना उमर रज़ि. कहीं से तौरात का कोई नुस्ख़ा ले कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! यह तौरात है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ललम ख़ामोश रहे मगर उमर रज़ि. ने उसे पढ़ना शुरू कर दिया, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ललम के चेहरा मुबारक (गुस्से से) बदलने लगा। सय्यदना अबुबकर रज़ि. (ने यह देखते हुए) कहा ऐ! उमर! गुम करने वालियां तुम्हें गुम पाऐं, क्या तुमने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरा मुबारक नहीं देखा?! सय्यदना उमर रज़ि. ने अल्लाह के रसूल के चेहरा मुबारक की तरफ देखा तो फौरन कहा : मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुस्से से अल्लाह की पनाह मांगता हूँ, मैं अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने पर राज़ी हूँ। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ''उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की जान है अगर आज मूसा अलैहि. तशरीफ ले आऐं तुम लोग मुझे छोड़ कर उनकी पैरवी शुरू कर दो, तो सीधी राह से भटक जाओगे जबकि मूसा अलैहि. अगर जिन्दा होते और मेरी

नबूवत का ज़माना पाते, तो वह भी मेरी ही इत्तेबा करते।"(सुनन दारमी 449)

इन हदीसों से मालूम होता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़ाबले में किसी और नबी की बात हुज्जत नहीं हो सकती तो फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़ाबले में किसी आलिम और फुक़्हा की बात कैसे हुज्जत हो सकती है। और अगर कोई शख़्स हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वाज़ेह हो जाने के बावजूद किसी आलिम, मुफ्ती या पीर व मुरशिद की बात पर अमल करे जबकि उसकी वह बात क़ुरआन व सुन्नत के सरीह ख़िलाफ भी हो तो उस शख़्स के इस गुमराह अमल पर अपने बारे में किसी ख़ुशफ़हमी में नहीं रहना चाहिए।

अपने अमल को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ मन्सूब करना किसी उम्मती की तरफ नहीं

मरवान ने एक मर्तबा अबु हुरैरह रज़ि. को मदीना का (अपना क़ायम मुक़ाम) गवर्नर बनाया और (ख़ुद किसी काम से) मक्का चले गए। उसी दौरान अबु हुरैरह रज़ि. ने हमें नमाज़े जुमा पढ़ाई। पहली रकअत् में सूरह जुमा और दूसरी रकअत में सूरह मुनाफिक़ून तिलावत की। इब्ने अबी राफे कहते हैं कि नमाज़े जुमा के बाद मैंने अबु हुरैरह रज़ि. से मुलाक़ात की और उनसे कहा कि आप रज़ि. ने (नमाज़े जुमा में) वही सूरते तिलावत फरमाई हैं जो अली रज़ि. (अपने दौरे ख़िलाफत में नमाज़े जुमा में) कूफा में पढ़ा करते थे। अबु हुरैरह रज़ि. ने फरमाया "मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह दोनों सूरतें नमाज़े जुमा में पढ़ते सुना है। (इसीलिए मैंने नमाज़े जुमा में पढ़ी हैं)"(सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमा ह. 877)

बहुत ही ग़ौर का मक़ाम है कि अली रज़ि. चौथे ख़लीफ़ा है कोई मामूली हस्ती नहीं लेकिन अबु हुरैरह रज़ि. ने अपने अमल को अली रज़ि. की तरफ मन्सूब नहीं किया, बल्कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ मन्सूब किया। जो लोग लोगों में खूब शोर मचाते है कि हम सहाबा को मानते हैं अहले हदीस नहीं मानते उनका अमल सहाबा रज़ि. के खिलाफ नहीं तो क्या है। जब वह कोई अमल करते हैं तो कहते हैं हमारे इमाम का तरीक़ा यही है। इस पर तुर्रा यह कि कुछ तअस्सुबी किताबों को लिखने वाले लोगों ने तो अपनी किताबों में यहाँ तक लिख दिया कि जिस हदीस पर हमारे इमाम ने अमल किया है वह हदीस सहीह है चाहे उसे मुहद्दसीन ने ज़ईफ कहा हो और जिस हदीस पर हमारे इमाम ने अमल नहीं किया वह हदीस ज़ईफ है चाहे उसे मुहद्दसीन ने सहीह कहा हो।

ऐसे लोग न तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानते हैं न ही सहाबा को मानते हैं सिर्फ शोर मचाते हैं हक़ीक़त से कोसों दूर रहते हैं। आप गौर करे सबसे ज्यादा शोर ढोल से होता है। सबको मालूम है कि ढोल अन्दर से खोखला होता है।

इस बात को समझाने के लिए आप के सामने एक मिसाल पेश कि जा रही है जिससे आप बात को अच्छी तरह समझ सकते हैं।

रफायदेन के बारे में कुछ लोगों के नज़रिये :-

1) कुछ लोगों के नज़दीक है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रफ़ायदैन साबित ही नहीं। लिहाज़ा यह बिद्अत है।

2) कुछ लोगों के नज़दीक है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रफायदैन करना और न करना भी साबित है लिहाज़ा यह दोनों सूरतें जाईज़ है इख्तिलाफ सिर्फ इसमें है कि बेहतर और मुस्तहब सूरत कौन सही है?

3) कुछ लोगों के नज़दीक है कि पहले आप रफायदैन किया करते थे बाद में मन्सूख हो गई।

4) कुछ लोगों के नज़दीक है कि मन्सूख तो नहीं हुई लेकिन उसका हमेशा करना साबित नहीं होता।

5) और कुछ जाहिल क़िस्म के लोग यह भी कहते हैं कि कई बुत परस्त नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ते वक़्त बगलों में बुत दबाए रखते थे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रफायदेन करने का हुक्म दिया ताकि बुत गिर जाएें।

इतने नज़रिये इसलिए बने कि मुकल्लिदों के पास सहीह दलील नहीं है। सिर्फ इन्हें सहीह दलीलों की मुख़ालफत करना आता है।

आप इस बात पर भी ग़ौर करें कि मुकल्लिद कहते चारों इमाम बरहक़ इन चार इमामों में से तीन इमाम रफायदैन के क़ायल हैं। तो क्या उन तीनों इमामों को मन्सूख का इल्म नहीं हुआ, जबकि वह इमाम अबु हनीफा के बाद में दुनिया में आए थे।

आखिर में एक बात की वज़ाहत और कर दूं कि गैर अहले हदीस हमें बदनाम करने के लिए कहते है कि हम सहाबा को नहीं मानते। हालांकि इनका यह एतराज़ ही गलत है, जब हम अहले हदीस है और अपनी दलील में कुरआन व हदीस पेश करते है, इनको इतनी बात समझ में नहीं आती कि जितनी हदीसे है सब सहाबा के वास्ते से उम्मत तक पहुँची है अगर हम सहाबा को नहीं मानते तो उनसे हदीस

कैसे लेंगे। यह सिर्फ इल्जाम है हकीकत में मुकल्लिद ही सहाबा को नहीं मानते इसको जानने के लिए पढ़ हमारी अगली किताब "जवाब हाज़िर हैं" बहुत जल्द मन्जरे आम पर आने वाली है जिसमें इनके कई इल्जामों के जवाब इनकी किताबों से दिए गऐ है।

यह है मुकल्लिदों का हाल।

इस किताबचे में यह कोशिश की गई है कि सहीह दलील आपके सामने पेश की जाए। अगर कोई हदीस पर कोई कलाम हो तो मुझे खबर दें ताकि अगले एडिशन में इस्लाह की जा सके।

इस किताबचे में जो खूबी है वह खास अल्लाह तआला का करम है और जो भी कमी व नुक्स है वह मेरी इन्सानी कमज़ोरी का नतीजा है। उसके लिए मैं अल्लाह तआला माफी का तलबगार हूँ, मुझे उम्मीद है वह रहीम, करीम अपने इस बन्दे की गलतियों का माफ फरमाएगा। आपसे और खास कर ओलमा हज़रात से गुजारिश है कि इसमें कोई जो भी गलती या नुक्स हो तो मुझे खबर करें ताकि अगले एडिशन में उसकी इस्लाह की जा सके। और आप अल्लाह तआला के यहाँ अज्र पाए।

अल्लाह तआला से दुआ है कि इस किताब को अवाम के फायदे के लिए कबूल फरमाए और मुझे भी अपने दामने रहमत में जगह अता फरमाए आमीन, मेरे वाल्देन की कब्र को रहमत भर दे उनको जन्नतुल फिरदोश में मकाम अता फरमाए। मेरे अहलो अयाल जो कि मेरी दअवत तब्लीग के काम में मेरी मदद करते है हर तरह से अल्लाह तआला उनको दुनिया व आखिरत में कामयाबी अता कर उनके गुनाहों को माफ कर, अल्लाह तआला मोहसिन भाई को दुनिया और आखिरत में कामयाबी अता फरमा जिन्होंने इस किताब का हर तरह से बेहतर बनाने में मेरी मदद की और इसकी इशाअत में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया, इस किताब को तरतीब देने में छपवाने में तक्सीम करने में ज़िन जिन साथियों ने मदद की है अल्लाह तआला उन्हें दुनिया व आख़िरत में कामयाब बनाए। आमीन।

जन्नत में मुलाकात का तलबगार
शैख मुहम्मद रईस कुरैशी
22-08-2014
मर्कज दअवतुल हक़
मस्जिद दारूस्साल, गांधी नगर,
उज्जैन (म.प्र)
mqraisqureshi@gmail.com

पेश लफ्ज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दुलिल्लाहि वस्सलातु वसल्लामु अला अशरफिल अम्बियाइ वल्मुर्सलीन।

अलहम्दुलिल्लाह आज जिस तरह से इस्लाम मज़हब में दूसरे मज़ाहिब के लोग शामिल हो रहे हैं, उसी तरह बहुत सारे मुस्लिम भाई भी शिर्क और बिदअत की ज़िन्दगी छोड़ कर कुरआन व सुन्नत की तरफ आ रहे हैं। मगर कुछ लोगों को यह सब बर्दाश्त नही हो रहा है और वह कुरआन व सुन्नत पर अमल करने से रोकने के लिए तरह तरह के हथकंडे इस्तेमाल कर रहे है। जैसा कि अहले हदीस लोगों पर अग्रेंजों की औलाद, सहाबा और इमामों को नहीं मानने का इल्ज़ाम लगाते हैं। इसके अलावा नये नये तरीक़ो से भी बदनाम करने पर तुले हैं। जैसे अगर कोई बन्दा किसी मसअले में मसलिहत के तौर पर खामोशी इख़्तियार करता है तो उसकी इस खामोशी को उसकी हार बता कर उसे मुआशरे में बदनाम करने की कोशिश करते है कि उसके पास इस मसअले में कोई दलील नही है, हालांकि अहले हदीस अपने हर अमल की दलील रखते हैं।

इस किताबचे में उन मसाईल को दलील के साथ इकठ्ठा किया गया है, जिन पर हमारे भाई आम तौर पर ऐतराज़ करते हैं। अब जिन्हें मानना है वह माने और जिन्हें नहीं मानना है वह नहीं माने, हमारा काम था हक को पहुंचाना सो पहुंचा चुके।

इस किताब को तरतीब देने वाले भाई मुहम्मद रईस कुरैशी को अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत में कामयाबी अता फरमाएं, ज़िन्होंने कई दिन मेहनत करने के बाद और कई क़िताबों से मदद लेने के बाद इस किताब को तरतीब दिया। अल्लाह उन्हें अपनी हिफाज़त में रखे और दुनिया व आखिरत में खैरो बरकत के दरवाज़े खोल दे आमीन ।

और उन लोगों के लिये भी दुआ करता हूं जिन लोगों ने इस किताब को शाया करने में किसी भी तरह की मदद की हो अल्लाह तआला उन्हें दुनिया व आख़िरत में कामयाबी अता फरमाये आमीन।

आखिर में अल्लाह तआला से दुआ है कि मुझ नाचीज़ की इस नाकाम सी कोशिश को मेरे लिये, मेरे वालिदैन मोहतरम के लिए ज़खीरा ए आख़िरत बनाये, मेरे तमाम

भाइयों और मेरी औलाद व मेरे साथियों व दोस्तों को हक़ को मजबूती से थामने उस पर अमल करने व जमे रहने की तौफीक़ दे, और हम तमाम के लिए दुनिया व आख़िरत में खैरो बरकत के दरवाज़े खोल दे आमीन या रब्बलआलमीन।

आपका दीनी भाई

मुहम्मद मोहसिन मेमन

धारणी, अमरावती, महा.

अल्लाह के नाम से जो रहमान, रहीम है।

अल्लाह तआला के लिए हैं तमाम तअरीफें और दरूद व सलाम हो आपके प्यारे रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर, रहमत हो आपकी आल व साथियों पर। इसके बाद

अज़ान के कलिमात दो दो बार और इक़ामत के कलिमात एक एक बार पढ़ने के दलाइल

1) सय्यदना अनस रज़ि. फरमाते हैं कि (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ से) "सय्यदना बिलाल रज़ि. को हुक्म दिया गया, अज़ान के कलिमात को दो दो दफा और इक़ामत के कलिमात को एक एक दफा कहने का।" (बुख़ारी 602, मुस्लिम 838)

2) सय्यदना अबू राफेअ रज़ि. फरमाते हैं कि "मैंने सय्यदना बिलाल रज़ि. को देखा कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अज़ान के कलिमात दो दो दफा कहते थे और इक़ामत के कलिमात एक एक बार कहते थे।" (इब्ने माजा 723, दारकुत्नी स. 241, जि. 1)

3) इमाम क़तादा फरमाते हैं कि "सय्यदना अनस रज़ि. की अज़ान के कलिमात दो दो और इक़ामत के एक एक होते थे।" (बैहक़ी स.413, जि. 1, मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा स. 205, जि. 1)

4) सय्यदना इब्ने उमर रज़ि. फरमाते हैं कि अज़ान के कलिमात दो दो दफा और इक़ामत के एक एक बार हैं।" (इब्ने अबी शैबा स. 205, जि. 1)

5) सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. फरमाते हैं कि (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ से) "अबू महज़ूरा को हुक्म दिया गया कि अज़ान के कलिमात को दो दो बार और इक़ामत के एक एक बार कहे।" (सुनन दारकुत्नी स. 239, जि. 1)

तकबीरे तहरीमा के वक़्त हाथ किस जगह तक उठाए जाए?

1) सय्यदना इब्ने उमर रज़ि. फरमाते हैं कि "मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि जब नमाज़ में खड़े होते तो हाथों को उठाते थे हत्ता कि आपके हाथ कान्धों के बराबर हो जाते और जब रूकू के लिए तकबीर कहते तो तब भी रफायदेन करते और जब रूकू से सर उठाते तो समिअल्लाहुलिमन हमिदा कहते और रफायदैन करते और सज्दों में न करते थे।"(बुख़ारी 736)

2) इमाम सालिम अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि "मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि जब नमाज़ शुरू करते तो हाथों को उठाते थे हत्ता कि कान्धों के बराबर हो जाते और रूकू करने से पहले और जब रूकू से सर उठाते तो तब भी रफायदैन करते और सज्दों के दर्मियान न करते थे।"(मुस्लिम 861)

3) सय्यदना अली रज़ि. फरमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब फर्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो तकबीरे तहरीमा कहते और दोनों हाथ कान्धों के बराबर उठाते और इसी तरह ही करते जब क़िरअत खत्म कर के रूकू करने का इरादा फरमाते और इसी तरह ही करते जब रूकू से सरे अक़दस उठाते थे और नमाज़ का जो हिस्सा बैठ कर पढ़ते थे उसमें रफायदैन न करते थे और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो इसी तरह रफायदेन करते और तकबीर कहते थे।"(अबू दाऊद 744, तिर्मिजी 3423, इब्ने माजा 864)

4) इमाम मुहम्मद बिन उमर फरमाते हैं कि मैं एक गिरोह सहाबा किराम की मज्लिस में बैठा हुआ था कि सय्यदना अबू हुमैद साअदी रज़ि. ने फरमाया "मैं तुम सबसे ज़्यादा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ को याद रखने वाला हूँ, मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि जब (नमाज़) के लिए तकबीरे तहरीमा कहते तो हाथों को कान्धों के बराबर उठाया करते थे।"(बुखारी, 828)

5) सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए तकबीरे तहरीमा कहते तो दोनों हाथों को कान्धों के बराबर उठाया करते और जब रूकू करते और रूकू से सज्दा के लिए सर उठाते और दो रकअतें पढ़ कर उठते तो रफायदैन इसी तरह करते थे।"(अबू दाऊद 748)

6) इमाम हाकिम फरमाते हैं कि "मैंने इमाम ताऊस को देखा कि वह तकबीरे

तहरीमा के वक्त हाथों को कान्धों के बराबर उठाते थे और (इसी तरह) रूकू करते और रूकू से सर उठाते वक़्त करते थे, आपके किसी दोस्त ने आपसे सवाल किया तो उन्होंने कहा कि सय्यदना इब्ने उमर रज़ि. अपने वालिद हज़रत उमर फारूक़ रज़ि. की रिवायत से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह (अमल) बयान करते थे।''(बेहक़ी स. 74, जि.2)

सीने पर हाथ बाँधना

1) सय्यदना वाइल बिन हुज्र रज़ि. फरमाते हैं कि ''मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दायाँ हाथ बायें हाथ पर सीने के ऊपर रखा।''(सहीह इब्ने खुज़ैमा स. 243, जि. 1, ह. 479)

कुछ हज़रात कहते हैं-कि इसकी सनद में मोअमिल बिन इस्माईल रावी है और उसे इमाम बुखारी ने मुन्कर हदीस कहा है। (मिज़ानुलएतदाल स.2289 जि.4)

मोअमिल बिन इस्माईल सिक़ह व सुदूक़ हैं। अल्लामा ज़हबी रह. वगैरह से जिरह नक़्ल करने में ख़ता हुई है, इमाम बुख़ारी रह. की मज़कूरा जिरह मोअमिल बिन इस्माईल पर नहीं बल्कि मोअमिल बिन सईद पर है देखे (तारीखुल कबीर स.49, जि.4 किस्म दोम) दरअस्ल अल्लामा ज़हबी को नक़्ल करते वक़्त शुब्हा हुआ है कि उनकी नज़र ऊपर वाली सतर की बजाए नीचे आ गई है, जिसकी वजह से उन्होंने यह जिरह मोअमिल बिन इस्माईल के बारे में नक़्ल कर दी है जबकि यह जिरह मोअमिल बिन सईद रावी पर है। वाज़ेह रहे कि मोअमिल बिन इस्माईल को इमाम इब्ने मुईन, इमाम इब्ने सईद, इमाम दारकुली ने सिक़ह कहा है इमाम अबू हातिम, इमाम रज़ी ने सुदूक़ कहा है, इब्ने हिब्बान ने उनकी तौसीक़ की है। इमाम अहमद, इमाम अली बिन मदीनी वगैरा अइम्मा उससे रिवायत करते हैं। (तहज़ीब स. 381, जि.10)

2) सय्यदना सहल बिन सअद रज़ि. फरमाते हैं ''लोगों को हुक्म दिया जाता था कि वह नमाज़ मे दांया हाथ बायें ज़िराअ पर रखें।''(बुख़ारी 740)

3) सय्यदना वाइल बिन हुज्र रज़ि. फरमाते हैं ''मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ लाए और मेहराब में दाख़िल हुए फिर तकबीर कह कर रफायदेन

किया और दायें हाथ को बाये हाथ पर सीने पर रखा।" (इब्ने अदी स. 2166, जि. 6 बैहक़ी स. 30, जि. 2)

4) सय्यदना हलब ताई रज़ि. फरमाते हैं कि "मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि वह (नमाज़ में) दाये और बाये सलाम फेरते थे और उन को (हाथों को) सीने पर रखते थे।"(मुसनद अहमद स.226 जि.5)

5) इमाम ताऊस फरमाते हैं कि "नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना दाया हाथ बाये पर रखते, फिर दोनों हाथ सीने पर बाँधते और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में होते थे।"(अबूदाऊद, 759, तोहफतुल अशराफ स. 237 जि. 13, ह. न. 18869)

6) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. फरमाने रब्बे तआला "फसल्लि लि रब्बिका वनहर" की तफ्सीर में फरमाते हैं कि इसके मानी यह हैं कि नमाज़ में दायें हाथ को बायें के ऊपर सीने के क़रीब रखा जाए। (सुनन कुबरा लिलबैहक़ी स. 31 जि. 2)

7) उक़्बा बिन सहबान फरमाते हैं कि सय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि "फसल्लि लि रब्बिका वनहर" की तफ्सीर में फरमाते हैं कि इससे मुराद दाये हाथ को बायें हाथ पर सीने पर रखना है।(बैहक़ी स. 30 जि.2, व तारीखुल कबीर लिलबुखारी स.437 जि.3,)

नमाज़ में सूरह फातिहा पढ़ने का बयान

1) सय्यदना उबादा बिन सामित रज़िअल्लाहु अन्हु रावी हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जो शख़्स सूरह फातिहा न पढ़े उसकी नमाज़ नहीं।" (बुख़ारी 756, मुस्लिम 874)

2) सय्यदना उबादा बिन सामित रज़िअल्लाहु अन्हु रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "उस शख़्स की नमाज़ नहीं जो उम्मुल कुरआन (सूरह फातिहा) की क़िरअत न करे।" (मुस्लिम 875)

3) इमाम महमूद बिन रबीअ फरमाते है कि मुझे सय्यदना उबादा बिन सामित रज़िअल्लाहु अन्हु ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है "जो शख़्स उम्मुल कुरआन की क़िरअत न करे उसकी नमाज़ नहीं।" (मुस्लिम 876)

4) सय्यदना उबादा बिन सामित रज़िअल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि "नमाज़ नहीं मगर सूरह फातिहा की तिलावत के साथ। (सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा, सफा 237, जिल्द 1)

5) सय्यदना उबादा बिन सामित रज़िअल्लाहु अन्हु रावी हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जो आदमी सूरह फातिहा नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ जाइज़ नहीं।" (सुनन दारकुत्नी सफा 322, जिल्द 1)

6) सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. फरमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने नमाज़ पढ़ी और उसमें सूरह फातिहा न पढ़ी तो उसकी नमाज़ नाक़िस है, नाक़िस है, पूरी नहीं है।"(अबू दाऊद 821, निसाई 910)

7) सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "नमाज़ जाइज़ नहीं जिसमें सूरह फातिहा न पढ़ी जाए (सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. कहते हैं) मैंने कहा कि अगर मैं इमाम के पीछे हूँ? अबू हुरैरह रज़ि. कहते हैं कि मेरा हाथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पकड़ लिया और फरमाया कि अपने नफ़्स (जी) में पढ़ा कर।"(सहीह इब्ने हिब्बान 1786)

8) सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "हर वह नमाज़ जिसमें सूरह फातिहा न पढ़ी जाए नाक़िस है" फिर फरमाया "नाक़िस है।" (मुसनद अहमद स. 290 जि. 2)

9) उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आइशा रज़ि. राविया हैं कि मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना कि आप फरमा रहे थे कि "हर नमाज़ जिसमें उम्मुल क़ुरआन न पढ़ी जाए वह नमाज़ नाक़िस है।"(इब्ने माजा 840)

10) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जिसने नमाज़ पढ़ी और सूरह फातिहा न पढ़ी तो उसकी नमाज़ नाक़िस और ग़ैरमुकम्मल है।"(किताबुल क़िरात लिलबैहक़ी स.38)

मौलाना सरफ़राज़ खान सफदर ने (हाशिया अहसनुल कलाम स.17, जि. 2) में इस रिवायत को सहीह क़रार दिया है।

11) सय्यदा आइशा रज़ि. राविया हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "हर वह नमाज़ जिसमें सूरह फातिहा न पढ़ी जाए (वह नमाज़) नाक़िस है।"(तबरानी सग़ीर स.164, जि.1, ह.न. 257)

12) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि. रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "हर नमाज़ जिसमें सूरह फातिहा न पढ़ी

जाए तो वह नमाज़ नाक़िस है, नाक़िस है।" (किताबुलक़िरात लिल बैहक़ी स.38)

13) सय्यदना उबादा बिन सामित रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई जेहरी नमाज़ पढ़ाई फिर फरमाया "जब मैं पुकार कर क़िरअत करूं तो तुम में से कोई एक भी कुछ न पढ़े मगर सूरह फातिहा।" (निसाई 921, दारक़ुत्नी स. 320, जि. 1)

14) इमाम नाफेअ फरमाते हैं कि सय्यदना उबादा बिन सामित रज़ि. ने सुबह की नमाज़ के लिए देर की तो अबू नईम मुअज़्ज़िन ने तकबीर कह कर लोगों को नमाज़ पढ़ाना शुरू कर दी, इतने में सय्यदना उबादा रज़ि. तशरीफ ले आए और मैं उनके साथ था, हमने अबू नईम के पीछे सफ बाँधी और अबू नईम बुलंद आवाज़ से क़िरअत कर रहे थे, सय्यदना उबादा बिन सामित रज़ि. सूरह फातिहा पढ़ने लगे, जब नमाज़ से फारिग़ हुए तो मैंने सय्यदना उबादा रज़ि. से कहा कि मैंने आपको सूरह फातिहा पढ़ते हुए सुना हालांकि अबू नईम बुलंद आवाज़ से क़िरअत कर रहे थे, उन्होंने कहा कि इसलिए कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई जेहरी नमाज़ पढ़ाई और आप क़िरअत से रूकने लगे जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ से फारिग़ हुए तो हमारी तरफ मुतवज्जह हो कर पूछा कि "क्या तुम पढ़ा करते हो जब मैं बुलंद आवाज़ से क़िरअत करता हूँ"? हम में से कुछ लोगों ने कहा हाँ हम ऐसा ही करते हैं। आपने फरमाया कि "मत पढ़ा करो तब ही तो मैं कहता था मुझे क्या हुआ कि कोई मुझसे कुरआन छीन लेता है लिहाज़ा जब मैं बुलंद आवाज़ से क़िरअत करूं तो सूरह फातिहा के अलावा कुरआन से कुछ न पढ़ा करो।" (अबूदाऊद 824, दारक़ुत्नी स. 319 जि.1, किताबुल क़िरअत स.50, बैहक़ी स.164, जि.2)

इमाम दारक़ुत्नी और बैहक़ी रह. फरमाते हैं कि इसके तमाम रावी सिक़ह है।

15) सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक क़ौल सहाबी बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "शायद तुम उस वक़्त पढ़ते हो जब इमाम क़िरअत कर रहा होता है?" दो या तीन बार यह फरमाया। सहाबा किराम रज़ि. ने अर्ज़ किया हाँ, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम पढ़ते हैं, आपने फरमाया कि "सूरह फातिहा के अलावा और क़िरअत न किया करो।" (मुसन्निफ अब्दुल रज़्ज़ाक़ स.127, जि.2, ह.न. 2766, मुसनद अहमद स.236, जि.5)

16) सय्यदना अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने सहाबा कराम को नमाज़ पढ़ाई, जब नमाज़ से फारिग़ हुए तो उनकी तरफ मुतवज्जह हो कर फरमाया कि "क्या तुम अपनी नमाज़ों में जब इमाम क़िरअत कर रहा होता है उसके पीछे क़िरअत करते हो?" सहाबा कराम खामोश रहे, तीन बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सवाल किया पस कहने वाले ने कहा या कहने वालों ने कहा कि जी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम ऐसा ही करते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि "ऐसा न किया करो, अलबत्ता सूरह फातिहा को आहिस्ता पढ़ लिया करो।"(मुसनद अबुआला स.193, जि.3, ह.न. 2797, सहीह इब्ने हिब्बान ह. 1841, व किताबुल क़िरअत लिल बैहक़ी स.152)

17) सय्यदना अबू क़तादा रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "क्या तुम मेरे पीछे पढ़ते हो?" हमने कहा "हाँ" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "सूरह फातिहा के अलावा क़िरअत न किया करो।"(किताबुल क़िरअत लिल बैहकी स. 63, मुसनद अहमद 308, जि. 5, सुनन कुबरा स.166 जि. 2)

18) इमाम यज़ीद बिन शरीक ने सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि. से इमाम के पीछे क़िरअत करने के बारे में सवाल किया तो आपने फरमाया "सूरह फातिहा की क़िरअत किया करो" यज़ीद ने कहा "ख्वाह आप भी इमाम हों?" सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि. ने कहा कि ख्वाह मैं ही इमाम क्यों न हूँ यज़ीद ने फिर सवाल किया कि 'अगर आप बुलंद आवाज़ से क़िरअत कर रहे हों?' तो आपने फरमाया कि "ख्वाह मैं बुलंद आवाज़ से ही क़िरअत कर रहा हूँ।" (किताबुल क़िरअत स. 72 ह.न. 165, बैहक़ी स.167, जि.2, दारकुत्नी स.317, मुसतदरक हाकिम स. 239 जि.1)

19) सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. फरमाते हैं जब इमाम सूरह फातिहा पढ़े तो तुम भी उसके साथ पढ़ो।(आसरे सुनन स.106)

20) इमाम उज़ैर बिन हैरीस बयान करते हैं कि सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. ने फरमाया कि "इमाम के पीछे सूरह फातिहा पढ़ो।" (किताबुल क़िरअत स. 77, तहावी स.141, बैहक़ी स.169 जि.2)

21) इमाम हस्सान बिन अतीया रावी हैं कि सय्यदना अबूदरदा रज़ि. ने फरमाया कि "इमाम के पीछे सूरह फातिहा न छोड़ो, ख्वाह इमाम आहिस्ता पढ़ रहा हो या बुलंद आवाज़ से।"(किताबुल क़िरअत स.17, बैहक़ी स.170 जि.2)

बुलंद आवाज़ से आमीन कहना

1) सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि जिसकी आमीन फरिश्तों की आमीन से मुवाफ्क़त कर गई उसके पिछले गुनाह माफ हो जाऐंगे।"(बुखारी 780, मुस्लिम 915)

2) सय्यदना वाइल बिन हुज्र रज़ि. से रिवायत है कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब "वलज़्ज़ाल्लीन" पढ़ते तो बुलन्द आवाज़ से आमीन कहते थे।"(अबु दाऊद 932, दारमी स.315 जि.1)

3) उम्मुलमोमिनून आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. राविया हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "यहूद किसी चीज़ में तुमसे हसद नहीं करते जितना कि सलाम और आमीन कहने पर करते है।"(इब्ने माजा 856, अलअदबुल मुफरद लिलबुखारी स. 656 ह.न. 988)

4) इमाम नईम बिन मुज़मर बयान करते हैं कि मैंने सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. के पीछे नमाज़ पढ़ी तो उन्होंने बिस्मिल्लाह पढ़ी फिर सूरह फातिहा की क़िरअत की और "वलज़्ज़ाल्लीन" पर पहुँचे तो आमीन कही और मुक़्तदियों ने भी आमीन कही, जब सज्दा करते तो अल्लाहु अकबर कहते, दो रकअत पढ़ कर जब खड़े होते तब भी अल्लाहु अकबर कहा और जब सलाम फेरा तो कहा मुझे उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है, बेशक मैं नमाज़ में तुमसे ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबहत रखता हूँ ,(निसाई 904, दारकुली स.306 जि.1, बैहक़ी स.64 जि. 2, इब्बने हिब्बान स.251 जि.1, मुसतदरक़ लिलहाकिम स.232 जि.1)

5) सय्यदा उम्मे हुसैन रज़ि. राविया हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी जब आपने "वलज़्ज़ाल्लीन" कहा तो आमीन की आवाज़ को मैंने औरतों की सफ में सुना।"(मुसनद इस्हाक़ स.371 जि.1)

6) इकरमा रज़ि. फरमाते है मैंने देखा कि इमाम जब "वलाज़्ज़ाल्लीन" कहता तो लोगों के आमीन की वजह से मस्जिद गूंज जाती।"(मुसन्निफ इब्ने अबी शेबा स. 187 ,जि.2)

7) अता बिन अबी रबाह रह. फरमाते हैं "मैंने दो सौ (200) सहाबा कराम रज़ि.

को देखा कि बैतुल्लाह में जब इमाम "वलज़्ज़ाल्लीन" कहता तो सब बुलंद आवाज़ से आमीन कहते।"(बैहक़ी स.59 जि.2)

8) इमाम इब्ने जरीर फरमाते हैं कि मैंने इमाम अता बिन रबाह से सवाल किया कि क्या सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. सूरह फातिहा की क़िरअत के बाद आमीन कहते थे? उन्होंने कहा "हाँ सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और उनके पीछे (तमाम) मुक़्तदी भी आमीन कहते थे यहाँ तक की मस्जिद में गूंज होती।" (मुसन्निफ अब्दुलरज़्ज़ाक़ स.96 जि.2 ह.न. 264)

रूकू में जाते वक़्त और रूकू से सर उठाते वक़्त रफायदैन करना

1) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो रफायदैन करते कान्धों के बराबर और जब रूकू के लिए तकबीर कहते और जब रूकू से सरे अक़दस उठाते तो तब भी कंान्धों के बराबर रफायदैन करते और "समीअल्लाहुलिमन हमिदा रब्बना व लकल हम्द" कहते और सज्दों में रफायदैन न करते थे।"(बुखारी 735)

2) इमाम मालिक इब्ने शहाब ज़ोहरी से रिवायत करते हैं वह इमाम सालिम से और वह (अपने वालिद) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो कान्धों के बराबर रफायदैन करते और जब रूकू के लिए तकबीर कहते और जब रूकू से सरे अक़दस उठाते तो तब भी कान्धों के बराबर रफायदैन करते और (रूकू से उठते वक़्त) "समिअल्ललाहुलिमन हमिदा- रब्बना व लकल हम्द" कहते थे और सज्दों में रफायदैन न करते थे।" (मूअत्ता इमाम मालिक, बरिवायत इब्ने क़ासिम स.113, ह.न. 9, छापाखाना दारूल शरूक़ जद्दा, सन 1988)

3) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. रावी हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो कान्धों के बराबर रफायदैन करते और जब रूकू करते और जब रूकू से सर उठाते तो तब भी रफायदैन करते थे। फिर कहते समीअल्लाहुलिमन हमिदा, फिर फरमाते रब्बना वलकल हम्द।"(मूअत्ता इमाम मालिक बरिवायत मुहम्मद बिन हुसैन शीजानी स.87)

4) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. बयान करते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो कान्धों के बराबर रफायदैन करते फिर अल्लाहु अकबर कहते और जब रूकू करते और रूकू से सर उठाते तो इसी तरह करते और सज्दों से उठते वक़्त रफायदैन न करते थे।''(मुस्लिम 862)

5) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. बयान करते हैं कि ''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो रफायदैन करते, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों हाथ कान्धों के बराबर हो जाते तो तकबीरे तहरीमा कहते, फिर जब रूकू करने का इरादा फरमाते तो रफायदैन करते यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों हाथ कान्धों के बराबर हो जाते, तकबीर कहते और रूकू इसी तरह करते, फिर जब रूकू से अपनी कमर सीधी करने का इरादा करते तो तब भी रफायदैन करते यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों हाथ कान्धों के बराबर हो जाते तो कहते समिअल्लाहुलिमन हमिदा, फिर सज्दा करते और सज्दों में रफायदैन न करते और इसी तरह ही रफायदैन करते हर रकअत में और हर तकबीर के साथ जो रूकू से पहले कहते यहाँ तक की आपकी नमाज़ पूरी हो जाती।''(मुसनद अहमद स.134 जि.2)

6) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. रावी हैं कि ''नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो कान्धों के बराबर रफायदैन करते और जब रूकू करते और रूकू से सर उठाते तब भी इसी तरह रफायदैन करते और (रूकू से उठाते वक़्त) समीअल्लाहुलिमन हमिदा रब्बना वलकल हम्द कहते थे।''(सुनन निसाई 879)

7) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. रावी हैं कि ''नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो कान्धों के बराबर रफायदैन करते और जब रूकू करते और रूकू से सर उठाते तब भी इसी तरह रफायदैन करते, और (रूकू से उठाते वक़्त) समीअल्लाहुलिमन हमीदा रब्बना वलकल हम्द कहते थे और सज्दों में रफायदैन न करते थे।'' (सहीह इब्ने हिब्बान 1858)

8) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. रावी हैं कि ''नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ में दाखिल होते तो अल्लाहु अकबर कहते और कान्धों के बराबर रफायदैन करते और जब रूकू करते तो तकबीर कहते और रफायदैन करते और रूकू से सर उठाते तब भी इसी तरह रफायदैन करते और सज्दों के दर्मियान रफायदैन न करते थे।'' (सुनन दारमी स.316 जि. 1 ह.न 1250)

9) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. बयान करते हैं कि ''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम को मैंने नमाज़ में दाखिल होते और रूकू करते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करते देखा है और आप सज्दों में रफायदैन न करते थे।" (मुसनद अहमद स.47 जि.2)

10) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो रफायदैन करते यहाँ तक कि जब दोनों हाथ कन्धों के बराबर हो जाते तो फिर अल्लाहु अकबर कहते, जब रूकू करते तो इसी तरह ही रफायदैन करते और जब रूकू करके उठते तब भी इसी कैफियत से रफायदैन करते और सज्दों से उठते वक़्त न करते थे।" (सुनन कुबरा स.7 जि. 2)

11) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो रफायदैन करते यहाँ तक कि आप के दोनों हाथ कान्धों के बराबर हो जाते और जब रूकू करते और जब रूकू से सर उठाते तो तब भी रफायदैन करते थे। रावी हदीस़ इमाम इब्ने अबी उमर ने यह अल्फाज़ भी रिवायत किये हैं कि सज्दों में रफायदैन न करते थे।"(सुनन तिर्मिज़ी 255)

12) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा आप जब नमाज़ शुरू करते तो रफायदैन करते यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों हाथ कान्धों के बराबर हो जाते और जब रूकू करने का इरादा करते और रूकू के बाद भी रफायदैन करते और सज्दों के दर्मियान रफायदैन न करते थे। रावी हदीस इमाम सुफियान बिन उययना कभी तो इन अल्फाज़ से बयान करते, जब रूकू से सर उठाते और अक्सर यह अल्फाज़ रिवायत करते, रूकू के बाद रफायदैन करते।(सुनन अबुदाऊद 721)

13) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि "आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लंम जब नमाज़ शुरू करते और जब रूकू करते और ज़ब रूकू से सर उठाते तो रफायदेन करते यहाँ तक की आपके दोनों हाथ कान्धों के बराबर हो जाते, सज्दों के दर्मियान रफायदैन न करते।"(इब्ने माजा 858)

14) इमाम अबू क़िलाबा ताबई रह. फरमाते हैं कि सय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. जब नमाज़ पढ़ते तो तकबीरे तहरीमा कहते और दोनों हाथों को उठाते थे (रफायदेन करते) और जब रूकू करने का इरादा करते तो रफायदेन करते और जब

रूकू से सर उठाते तब भी रफायदैन करते (और सय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रज़ि) बयान करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इसी तरह (रफायदैन) करते थे। (सहीह बुखारी 737)

15) सय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. बयान करते हैं कि "मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा जब तकबीरे तहरीमा कहते तो रफायदेन करते और जब रूकू करते तो रफायदैन करते और जब रूकू से सरे मुबारक उठाते तो रफायदेन करते यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों हाथ कानों की लौ तक पहुँच जाते।" (अबुदाऊद 745)

16) इमाम नसर बिन आसिम बयान करते हैं कि सय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में से थे वह (निसाई के एक नुस्खे में है कि खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब नमाज़ पढ़ते तो तकबीरे तहरीमा के वक़्त कानों के बराबर रफायदेन करते और जब रूकू करने का इरादा करते और जब रूकू से सर उठाते तो रफायदैन करते थे।" (सुनन निसाई स.140 जि.1)

17) सय्यदना वाइल बिन हुज्र रज़ि. से रिवायत है उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा जब नमाज में दाखिल हुए तो तकबीरे तहरीमा कही और रफायदैन किया, (रावी हदीस इमाम) 'हमाम' ने कानों तक रफायदैन करने का बतलाया है, फिर कपड़ा लपेट लिया और दायाँ हाथ बायें हाथ पर रख दिया और जब रूकू का इरादा किया तो अपने दोनों हाथ कपड़े से निकाले और रफायदैन किया फिर (रूकू के लिए) तकबीर कही और रूकू किया और जब (रूकू से उठ कर) समीअल्लाहुलिमन हमिदा कहा तो रफायदैन किया और जब सज्दा किया तो दोनों हथेलियों के दर्मियान किया। (मुस्लिम 896)

18) सय्यदना वाइल बिन हुज्र रज़ि. फरमाते हैं कि मैंने कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ को देखूंगा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ कैसे पढ़ते हैं। मैंने देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए और तकबीर कही फिर रफायदैन किया कानों के बराबर, फिर दायाँ हाथ बायें पर रखा। जब रूकू करने का इरादा किया तो उसी कैफियत से रफायदेन किया और (रूकू में) दोनों हाथ घुटने पर रखे, फिर जब रूकू से सर उठाया तो रफायदेन उसी तरह किया, फिर सज्दा किया तो अपनी हथेलियों को कानों के बराबर रखा, (सज्दे से उठ कर) पांवो को बिछा कर उस पर बैठे और बायें हाथ की हथेली अपनी रान

और घुटने पर रखी और दायें हाथ की कोहनी दाहनी रान पर जमाई फिर दो उंगलियों को बन्द करके एक हल्क़ा बान्ध लिया (उंगली और अगुंठे से) और कलमे की उंगली को उपर उठा लिया तो मैंने देखा कि आप उसको हरकत दे रहे थे और दुआ कर रहे थे। (सुनन निसाई 890)

19) इमाम मुहम्मद बिन अम्र बिन अता बयान करते हैं कि सय्यदना अबू हुमैद साअदी रज़ि. से मैंने सुना वह दस सहाबा कराम रज़ि. में बयान कर रहे थे जिनमें से एक सय्यदना अबू क़तादा रज़ि. भी थे। सय्यदना अबू हुमैद रज़ि.ने कहा आप लोगों में से सब से ज़्यादा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ को जानता हूँ, उन्होंने कहा यह किस तरह? अल्लाह की क़सम आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हमसे ज़्यादा इत्तिबअ नहीं करते थे और न ही हमसे पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए। सय्यदना अबू हुमैद साअदी रज़ि. ने कहा हाँ यह दुरूस्त है, तब सहाबा कराम रज़ि. ने कहा अच्छा (नमाज़ का तरीक़ा) बयान करो, सय्यदना अबू हुमैद साअदी रज़ि. ने कहा सय्यदना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो कान्धों के बराबर रफायदेन करते थे और तकबीर कहते और जब हर एक हड्डी एतेदाल से अपनी जगह आ जाती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़िरअत शुरू करते फिर तकबीर कहते और कान्धों के बराबर रफायदेन करते थे और हथेलियों को अपने घुटनों पर रखते और कमर सीधी करते यानी सर को पीठ के बराबर करते न झुकाते और न ऊँचा रखते, फिर समिअल्लाहुलिमन हमिदा कहते और कान्धों के बराबर रफायदेन करते फिर सीधे खड़े हो कर अल्लाहु अकबर कहते और ज़मीन की तरफ झुकते और (सज्दों में) अपनें दोनों हाथों को अपने पहलूओं से जुदा रखते इसके बाद सज्दे से सर उठाते और बायें पांव को बिछा कर उस पर बैठते और सज्दे के वक़्त उंगलियों को खुला रखते, फिर दूसरा सज्दा करते, अल्लाहु अकबर कह कर सज्दे से सर उठाते तो बायें पांव को बिछा कर उस पर बैठते इस क़दर कि हर हड्डी अपने ठिकाने पर आ जाती फिर दूसरी रकअत में भी इसी तरह करते फिर जब दो रकअतों से फारिग़ हो कर खड़े होते तो अल्लाहु अकबर कह कर रफायदेन करते जिस तरह शुरू नमाज़ में करते थे, फिर बाकी नमाज़ भी इसी तरह पढ़ते यहाँ तक कि जब आखिरी सज्दे से फारिग़ होते जिसके बाद सलाम होता है, तो अपना बायाँ पाँव एक तरफ निकालते और बायें कुल्हे पर बैठते, यह तरीक़ा नमाज़ का सुन कर सहाबा किराम रज़ि. ने कहा ऐ अबू हुमैद साअदी रज़ि. तूने बिल्कुल सच कहा, रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसी तरह नमाज़ पढ़ते थे। (अबु दाऊद 730, इब्ने हिब्बान स. 177 जि. 4 ह.न. 1873)

20) इमाम अब्बास बिन सहल फरमाते हैं कि सय्यदना अबू हुमैद साअदी रज़ि., सहल बिन सअद रज़ि. और मुहम्मद बिन मुस्लिम रज़ि. जमा हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ का तज़किरा किया, सय्यदना अबू हुमैद साअदी रज़ि. ने कहा कि "मैं सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ को जानता हूँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए तकबीरे तहरीमा कही तो रफायदैन किया, फिर जब रूकू की तकबीर कही तो रफायदैन किया फिर जब रूकू से खड़े हुए तब भी रफायदैन किया और सीधे खड़े रहे यहाँ तक कि हर हड्डी अपने ठिकाने पर आ गई।"(इब्ने माजा 873, इब्ने हिब्बान स. 175 जि.4 ह.न. 1868)

21) सय्यदना अली बिन अबू तालिब रज़ि. फरमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब फर्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो कान्धों के बराबर रफायदैन करते थे, जब किरअत से फारिग़ होते और रूकू करने का इरादा फरमाते तो तब भी इसी तरह रफायदैन करते थे और जब रूकू से सरे अक़दस उठाते तो भी इसी तरह रफायदैन करते थे और नमाज़ का जो हिस्सा बैठ कर अदा फरमाते उसमें रफायदैन न करते थे। और जब दो रकअत पढ़ कर (तीसरी रकअत के लिए) खड़े होते तो इसी तरह रफायदैन करते थे।" (तिर्मिज़ी 3423, अबूदाऊद 861, इब्ने खुज़ैमा स. 295 जि.1 ह.न. 584, मुसनद अहमद स.93 जि.1)

22) सय्यदना अली बिन अबू तालिब रज़ि. बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब फर्ज़ नमाज़ के लिए खड़े होते तो तकबीर कहते और रफायदैन करते यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों हाथ कान्धों के बराबर हो जाते और जब रूकू करने का इरादा करते और जब रूकू से सर उठाते तो तब भी इसी तरह रफायदैन करते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो तब भी रफायदैन इसी तरह करते थे।"(इब्ने माजा 846)

23) सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि.से रिवायत है कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते तो तकबीरे तहरीमा कहते फिर अपने दोनों हाथ कान्धों के बराबर उठाते थे और जब रूकू करते तो उसी तरह रफायदैन करते और (रूकू के बाद) रफायदैन करते और जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तब भी रफायदैन करते।"(सहीह इब्ने खुज़ैमा स. 344 जि.1 ह.न. 694)

24) सय्यदना अबू मूसा अशअरी रज़ि. ने फरमाया कि "मैं आप लोगों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ पढ़ कर दिखाऊं? पस आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाहु अकबर कह कर रफायदेन किया फिर तकबीर कही और रूकू के लिए रफायदेन किया फिर (जब रूकू से उठा कर) समीअल्लाहुलिमन हमिदा कहा तो रफायदेन किया और फरमाया इस तरह (नमाज़ में रफायदेन) किया करो और आपने सज्दों में रफायदेन न किया।" (सुनन दारकुली स.292 जि.1)

25) इमाम अता बिन रबाह फरमाते हैं कि मैंने सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी "आप नमाज़ शुरू करते वक़्त रूकू करने से पहले और रूकू के बाद रफायदेन करते थे" मैंने उनसे पूछा तो आपने फरमाया कि मैंने सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी, वह नमाज़ शुरू करते वक़्त और रूकू करते वक़्त और रूकू से उठते हुए रफायदेन करते थे। सय्यदना अबू बकर रज़ि. ने फरमाया कि "मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ शुरू करते वक़्त और रूकू से पहले और रूकू के बाद रफायदेन करते थे।" इमाम बैहक़ी फरमाते हैं इस रिवायत के तमाम रावी सिक़ह रावी हैं।(सुनन कुबरा स.73 जि.2)

26) इमाम अबू ज़ुबैर रह. फरमाते हैं कि "मैंने सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. को देखा वे जब तकबीरे तहरीमा कहते और जब रूकू करते और जब रूकू से सर उठाते तो रफायदेन करते और (सज्दों के) दर्मियान न करते, इमाम अबू ज़ुबैर ने कहा कि "यह क्या है?" तो सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. ने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसी तरह नमाज़ पढ़ते देखा।" (मुसनद सिराज स. 62 ह.न० 92)

27) सय्यदना अनस बिन मालिक रज़ि. रावी हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ शुरू करते और जब रूकू करते और जब रूकू से उठते तो रफायदेन करते थे।" (मुसनद अबू आला स. 5 जि. 4 ह. न. 3781)

28) सय्यदना अनस बिन मालिक रज़ि. रावी हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर रज़ि. और हज़रत उमर रज़ि. की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी है। यह तमाम नमाज़ शुरू करते वक़्त और जब रूकू के लिए तकबीर कहते और जब रूकू से सर उठाते तो रफायदेन करते और सज्दे के लिए तकबीर कहते थे।" (मुअज़मुल अवसत स.239 जि.7 ह.न. 6460)

29) अबू अब्दुल जब्बार से रिवायत है कि उन्होंने सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि को देखा, उन्होने कहा कि अलबत्ता मैं आपको ज़रूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ पढ़ाऊंगा, उसमें ज़्यादा करूंगा न कम, पस उन्होंने अल्लाह की क़सम उठा कर कहा कि आपकी यही नमाज़ थी हत्ता कि आप इस दुनिया से तशरीफ ले गए। रावी ने कहा पस मैं आपकी दाँई जानिब खड़ा हो गया ताकि देखूं कि आप क्या करते हैं, पस उन्होंने नमाज़ अदा की, अल्लाहुअकबर कहा और रफायदेन किया फिर (रफायदेन किया और) रूकू किया, तकबीर कही (रूकू के बाद) और रफायदेन किया फिर सज्दा किया और अल्लाहु अकबर कहा हत्ता कि आप अपनी नमाज़ से फारिग़ हो गए। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फरमाया मैं अल्लाह की क़सम उठा कर कहता हूँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यही नमाज़ थी यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हो गई।"(अलमुअजम लिल इब्ने अरबी स.226 जि.1 ह.न. 146)

30) इमाम नाफेअ बयान करते हैं सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. जब नमाज़ में दाख़िल होते तो तकबीर कहते और रफायदेन करते और जब रूकू करते तो रफायदेन करते और जब रूकू से सर उठाते तो रफायदेन करते और जब दो रकअत पढ़ कर उठते तो रफायदेन करते और अपने इस अमल को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक मरफूअ करते थे। (बुखारी 739)

31) इमाम ख़त्तान बिन अब्दुल्लाह फरमाते हैं कि सय्यदना अबू मूसा अशअरी रज़ि. ने कहा कि मैं आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली नमाज़ पढ़ कर दिखाऊं? फिर आपने अल्लाहु अकबर कह कर रफायदेन किया फिर (रूकू के वक्त) अल्लाहु अकबर कह कर रफायदेन किया फिर समिअल्लाहुलिमन हमिदा कह कर रफायदैन किया और फरमाया कि इसी तरह करो और सज्दों में रफायदेन न किया।"(सुनन दारकुत्नी स.292 जि.1 ह.न. 16)

32) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. फरमाते हैं कि "मैंने सय्यदना अबूबकर रज़ि. की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी आप नमाज़ शुरू करते वक़्त और रूकू करते वक़्त और रूकू से उठते हुए रफायदैन करते थे।"(सुनन कुबरा लिलबैहक़ी स.73 जि. 2)

33) इमाम अता बिन अबी रबाह फरमाते हैं कि "मैंने सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. के पीछे नमाज़ पढ़ी है, आप नमाज शुरू करते वक़्त रूकू से पहले और रूकू से सर उठाते हुए रफायदैन करते थे।" (सुनन कुबरा लिलबैहक़ी स. 73 जि.

2)

34) अबू हमज़ा फरमाते हैं कि मैंने सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. को देखा कि आप जब नमाज़ शुरू करते और जब रूकू करते और जब रूकू से सर उठाते तो रफायदेन करते थे।''(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा स.235 जि.1, जुज़ रफायदेन स.27)

35) इमाम अता फरमाते हैं कि सय्यदना अबू सईद खुदरी, इब्ने अब्बास, सय्यदना जुबैर और सय्यदना इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम को मैंने देखा है यह तमाम इमाम ज़ोहरी (से मरवी) हदीस के मुताबिक़ रफायदेन करते थे।'' (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा स. 235)

इमाम ज़ोहरी की रिवायत की हदीस न. 2 पर गुज़र चुकी है

36) इमाम सईद बिन जुबेर ताबई रह. से रफायदेन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया कि ''यह एक ऐसी चीज़ है जिसके साथ नमाज़ की ज़ीनत हो जाती है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम रज़ियल्लाहुअन्हुम अजमईन शुरू नमाज़ मे, रूकू के वक़्त और रूकू से सर उठाने के बाद रफायदेन करते थे।''(सुनन कुबरा लिलबेहक़ी स.75 जि. 2)

37) हुमैद से रिवायत है कि ''सय्यदना अनस बिन मालिक रज़ि. जब नमाज़ शुरू करते और जब रूकू करते और जब रूकू से सर उठाते तो रफायदेन करते थे।'' (मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा स.235 जि.1)

38) सय्यदना उक़्बा बिन आमिर रज़ि. फरमाते हैं '' जो शख्स नमाज़ में हाथ से इशारा करता है, उसे हर (मसनून) इशारा के बदले एक उंगली पर एक नेकी या दरजा मिलता है।'' (मुअजमुल कबीर लिलतबरानी स. 297 जि.17 ह.न. 819)

वाज़ेह रहे कि यह रिवायत मसअला रफायदेन के बारे में ही है, जैसा कि अल्लामा हैसमी ने इसे रफायदेन के बाब में ज़िक्र किया है और इमाम इस्हाक़ बिन राहविया रह. ने भी इसका यही मफहूम सय्यदना उक़्बा रज़ि. से बयान किया है। (मअरिफतुल सुनन वल आसार स.562 जि.1 ह.न.792)

39) इमाम अबू क़िलाबा ताबई रूकू करते वक़्त और रूकू से सर उठाते हुए रफायदेन करते थे।'' (मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा स.235 जि.1)

40) इमाम मुहम्मद बिन सीरीन ताबई नमाज़ शुरू करते हुए और रूकू करते वक़्त और जब रूकू से सर उठाते तो रफायदेन करते थे।(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा स. 235 जि.1)

41) हाकिम फरमाते हैं कि मैंने इमाम ताऊस को देखा कि उन्होंने तकबीरे तहरीमा के साथ ही और रूकू के वक़्त और रूकू से सर उठाते हुए कान्धों के बराबर रफायदेन किया।(सुनन कुबरा लिलबैहक़ी स.74 जि.2)

सज्दे में जाते वक़्त ज़मीन पर पहले हाथ रखना

1) अबु हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जब तुममें से कोई सज्दा करे तो ऊँट की तरह न बैठे बल्कि अपने दोनों हाथ घुटनों से पहले रखे।"(अबुदाऊद 840)

2) नाफेअ रह. रिवायत करते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि. अपने हाथ घुटनों से पहले रखते और फरमाते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा ही करते थे।(इब्ने खुजैमा 1/319 ह.न.627, मुस्तरह 1/226)

औरतें सज्दे में बाजू न बिछाएँ

1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "तुममें से कोई (मर्द या औरत) अपने बाजू सज्दे में इस तरह न बिछाए जिस तरह कुत्ता बिछाता है।"(बुख़ारी 822, मुस्लिम 493)

2) बरा बिन आज़िब रज़ि. से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जब तुम सज्दा करो तो अपने दोनों हाथ ज़मीन पर रखो और अपनी दोनों कोहनियों को बुलंद करो।"(मुस्लिम 494)

जल्सए इस्तिराहत (दोनों सज्दों के बाद कुछ देर बैठना)

1) इमाम अबू क़िलाबा फरमाते हैं कि हमारे पास सय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रजि. तशरीफ लाए और हमारी इस मस्जिद में हमें नमाज़ पढ़ाई, कहने लगे कि मैं आपको नमाज़ पढ़ाता हूँ मेरी नियत (महज़) नमाज़ पढ़ाने की नहीं है, बल्कि मैं आपको यह बतलाना चाहता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैंने

कैसे नमाज़ पढ़ते देखा। इमाम अय्यूब सिखतियानी कहते हैं कि मैंने इमाम अबू क़िलाबा से पूछा सय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. ने किस तरीक़े से नमाज़ पढ़ाई? उन्होंने कहा कि हमारे शेख सय्यदना अम्र बिन सलमा रज़ि. की तरह। इमाम अय्यूब फरमाते है कि सय्यदना अम्र बिन सलमा पूरी (बाईस) तकबीरें कहते और जब दूसरा सज्दा कर के सर उठाते तो बैठ जाते फिर ज़मीन पर (हाथों की) टेक लगाते फिर उठते थे।" (बुख़ारी 864)

2) सय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रज़ि. रावी हैं कि "उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब ताक़ (विषम) रकअत पढ़ लेते तो (सीधे) खड़े न होते जब तक ठीक तरह बैठ न जाते थे।" (बुख़ारी 823)

3) सय्यदना अबू हुरैरह रज़ि. रावी हैं कि एक शख़्स मस्जिद में आया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद के कोने में बैठे हुए थे (आने वाले) उस शख़्स ने नमाज़ पढ़ी फिर आ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम कहा, आपने वअलैकुमुस्सलाम कहा और फरमाया जा कर नमाज़ पढ़ तूने नमाज़ नहीं पढ़ी। वह फिर गया दोबारा नमाज़ अदा की और आकर सलाम कहा, आपने वअलैकुमुस्सलाम कहा और फरमाया जा कर नमाज़ पढ़ तूने नमाज़ नहीं पढ़ी, वह फिर गया तिसरी मर्तबा नमाज़ अदा की और आकर सलाम कहा, आपने वअलैकुमुस्सलाम कहा और फरमाया जा कर नमाज़ पढ़ तूने नमाज़ नहीं पढ़ी, आखिर दूसरी या तीसरी मर्तबा अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे नमाज़ पढ़ना सिखलाइए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब तू नमाज़ के लिए खड़ा हो तो अच्छा वुज़ू कर, फिर क़िब्ला रूख हो कर अल्लाहु अकबर कह, फिर जो क़ुरआन आसानी से पढ़ सके वह पढ़, फिर इत्मिनान के साथ रूकू कर, फिर सर उठा कर सीधा खड़ा हो जा, फिर इत्मिनान से सज्दा कर, फिर सज्दे से सर उठा कर इत्मिनान से बैठ जा, फिर दूसरा सज्दा इत्मिनान से कर, फिर सर उठा फिर इत्मिनान से बैठ जा, इसी तरह पूरी नमाज़ अदा कर।" (बुख़ारी 6251)

सज्दे में दोनों ऐड़ियाँ आपस में मिली रहे

1) सय्यदा आइशा रज़ि. बयान फरमाती है कि "मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सज्दे की हालत में देखा आपके पांव की दोनों ऐड़ियाँ मिली हुई थीं और

पांव की उंगलियों के सिरे क़िबला रूख़ थे।''(बेहक़ी 2/116, इसे इब्ने ख़ुज़ैमा 654 हाकिम 1/1228 और ज़हबी ने सहीह कहा)

2) सय्यदा आइशा रज़ि. फरमाती हैं ''मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रात में बिस्तर से गुम पाया, मैं (अन्धेरे में) उन्हें तलाश करने लगी तो मेरा हाथ आपके क़दमों के अन्दर वाले हिस्से पर लगा और आप सज्दे की हालत में थे। आपके पांव खड़े थे, ऐड़ियाँ मिली हुई थीं और आपने पांव की उंगलियों को मोड़ कर क़िबला रूख़ किया हुआ था।''(मुस्लिम 476, सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा 654 अल अज़्मा ने इसे सहीह कहा, शुएब अरनाउत ने सही अला शर्त मुस्लिम कहा और इमाम हाकिम और ज़हबी ने बुखारी व मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है)

नमाज़ में उठते वक़्त हाथों पर टेक लगाना

1) इमाम अबू क़िलाबा फरमाते हैं कि हमारे पास सय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रज़ि.तशरीफ लाए और हमारी इस मस्जिद में हमें नमाज़ पढ़ाई, कहने लगे कि मैं आपको नमाज़ पढ़ाता हूँ, मेरी नियत (महज़) नमाज़ पढ़ाने की नहीं है, बल्कि मैं आपको यह बतलाना चाहता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैंने कैसे नमाज़ पढ़ते देखा। इमाम अय्यूब सिखतियानी कहते हैं कि मैंने इमाम अबू क़िलाबा से पूछा सय्यदना मालिक बिन होरिस रज़ि. ने किस तरीक़े से नमाज़ पढ़ाई? उन्होंने कहा कि हमारे शैख सय्यदना अम्र बिन सलमा रज़ि. की तरह। इमाम अय्यूब फरमाते कि सय्यदना अम्र बिन सलाम रज़ि. पूरी (बाईस) तकबीरे कहते और जब दूसरा सज्दा करके सर उठाते तो बैठ जाते फिर ज़मीन पर (हाथों की) टेक लगाते फिर उठते थे।''(बुख़ारी 864)

2) इमाम अरज़क़ बिन क़ैस फरमाते हैं कि मैंने सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. को देखा कि जब नमाज़ में खड़े होते तो हाथों पर (ज़मीन पर) टेक लगा कर उठते थे, मैंने उनसे कहा यह क्या है? उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि वह इसी तरह किया करते थे।''(मुअजमुल वस्त तबरानी स.210 जि.4 ह.न.3371)

3) इमाम नाफ़ेअ फरमाते हैं कि सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. जब (दूसरे) सज्दे से सर उठाते तो हाथ उठाने से पहले उन पर टेक लगा कर खड़े होते थे।'' (मुसन्निफ अब्दुल रज़्ज़ाक़ स.178 जि.2 ह.न. 2964, 3969)

4) इमाम खालिद फरमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू क़िलाबा और हसन बसरी रह. को देखा है कि वह नमाज़ में हाथों पर टेक लगा कर उठते थे। (मुसिन्नफ इब्ने शैबा स.395 जि.1)

आखिरी तशहहुद में तवर्रूक करना

1) इमाम मुहम्मद बिन अम्र बिन अता से रिवायत है कि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम के दर्मियान बैठे हुए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ का तज़किरा छिड़ गया तो सय्यदना अबू हुमैद साअदी रज़ि. फरमाने लगे कि मैं आप सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ को याद रखने वाला हूँ। मैंने देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तकबीरे तहरीमा कहते तो अपने दोनों हाथ मोंढों के बराबर ले जाते और जब रुकू करते तो अपने दोनों हाथों को घुटनों पर जमा देते। फिर अपनी पीठ झुका कर सर और गर्दन के बराबर कर देते, फिर सर उठा कर सीधे खड़े हो जाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पीठ की हर पसली अपनी जगह पर आ जाती और जब सज्दा करते तो दोनों हाथ ज़मीन पर रखते, न बाज़ू झुकाते न समेट कर पहलू से लगाते और पांव की उंगलियों के अतराफ क़िब्ले की तरफ से रखते जब दो रकअत पढ़ कर तशहहुद मे बैठते तो बाँया पाँव बिछा कर उस पर बैठते और दाँया खड़ा रखते और जब आखिरी तशहहुद में बैठते तो बाँया पाँव बिछा कर दाहिना खड़ा रखते और सुरीन के बल बैठते थे। (बुखारी 828)

2) इमाम मुहम्मद बिन अम्र बिन अता बयान करते हैं कि मैंने सय्यदना अबू हुमैद साअदी रज़ि. से दस सहाबा कराम रज़ि. की मौजूदगी में सुना, जिसमें से एक सय्यदना अबू क़तादा रज़ि. भी थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब आखिरी रकअत पर पहुँचते जिसमें नमाज़ पूरी हो जाती है तो तशहहुद में बाँये पाँव को पीछे हटाते और सुरीन पर बैठ कर तवर्रुक करते, फिर सलाम फेर देते थे।"
(तिर्मिज़ी 304)

तशहहुद में उंगली से इशारा करना

1) सय्यदना उमर रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज (के क़ाअ़दे) में बैठते तो अपने दोनों हाथ अपने दोनों घुटनों पर रखते और दाहिने हाथ की तमाम उंगलियां बन्द कर लेते और अपनी दाहिनी उंगली जो अंगूठे के नज़दीक है उठा लेते, फिर उसके साथ दुआ मांगते और बांया हाथ बांये घुटने पर बिछा लेते।"(मुस्लिम 580)

2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब (नमाज़ में) तशहहुद पढ़ने बैठते तो अपना दायां हाथ दायें और बायां हाथ बाईं रान पर रखते और शहादत की उंगली के साथ इशारा करते और अपना अंगुठा अपनी दर्मियानी उंगली पर रखते। एक रिवायत में है कि बायां हाथ बायें घुटने पर और दायां हाथ दाईं रान पर रखते।"(मुस्लिम 579)

3) हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि. से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दूसरे सज्दे से उठ कर क़ाअ़दे में बैठे, दो उंगलियों को बन्द किया, अंगूठे और दर्मियान की बड़ी उंगली से हल्क़ा बनाया और शहादत की उंगली से इशारा किया।"(अबुदाऊद 762, इब्ने हिब्बान 1484, इब्ने खुज़ैमा 713,714)

4) हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ि. फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उंगली उठाई और उसे हिलाते थे।"(निसाई 889, इब्ने हिब्बान 1485, इब्ने खुज़ैमा 714)

कन्धें से कन्धा और क़दम से क़दम मिलाना सुन्नत है

1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "अपनी सफों को बराबर करो, बिलाशुब्हा सफों का बराबर करना नमाज़ के क़ायम करने में दाख़िल है।" (बुख़ारी 732, मुस्लिम 433)

2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "सफों को सीध ा करो क्योंकि सफ को सीधा करना नमाज़ के हुस्न में से है।"(बुख़ारी 722, मुस्लिम 435)

3)हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों की तरफ मुँह करके फरमाया "लोगो! अपनी सफें सीधी करो। लोगो! अपनी सफें दुरूस्त करो। लोगो! अपनी सफें बराबर करो। सुनो! अल्लाह की क़सम अगर तुमने सफें सीधी न कीं तो अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में इख़्तिलाफ और फूट डाल देगा।" फिर तो यह हालत हो गई कि हर शख़्स अपने साथी के टखने से टखना, घुटने से घुटना और कान्धे से कान्धा चिपका देता।"(अबूदाऊद 662, इब्ने हिब्बान 396)

4) हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "सफों को सीधा करो और आपस में नज़दीक खड़े हो, यक़ीनन में तुम्हें पसे पुश्त भी देखता हूँ" हज़रत अनस रज़ि. कहते हैं कि हममें से हर शख्स (सफों में) अपना कान्धा दूसरे के कान्धे से और अपना क़दम दूसरे के क़दम से मिला देता था।(बुखारी 725, मुस्लिम 434)

5) सय्यदना जाबिर बिन समुरा रज़ि. बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम उस तरह सफें नहीं बान्धते जैसे परवदिगार के हुज़ूर फरिश्ते सफें बान्धते हैं। हमने अर्ज़ किया फरिश्ते परवदिगार के हुज़ूर कैसे सफें बान्धते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पहले अव्वलीन सफों को पूरा करते हैं और सफों में चूनागच दीवार की तरह खड़े होते हैं।(सुनन अबुदाऊद 661)

6) सय्यदना अनस बिन मालिक रज़ि. रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सफों में चूनागच दीवार की तरह मिल कर खड़े हों और एक सफ दूसरी सफ के क़रीब रखो और गर्दनों को बराबर रखो (हमवार जगह पर सफबन्दी करो) उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं देखता हूँ कि सफ की खाली जगह के अन्दर शैतान घुस आता है जैसा कि बकरी का बच्चा है।"(सुनन अबूदाऊद 667, निसाई 816)

रकअते वित्र

1) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. बयान करते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रात की नमाज़ के बारे में सवाल किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "रात की नमाज़ दो दो

रकअत हैं। और जब तुममें से कोई सुबह होने से डरे तो एक रकअत वित्र पढ़ ले वह (एक वित्र) उसकी पूरी नमाज़ को ताक़ (विषम) बना देगी। इमाम नाफेअ फरमाते हैं कि सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. जब वित्र की तीन रकअतें पढ़ते तो दो रकअतें पढ़ कर सलाम फेरते थे यहाँ तक कि किसी ज़रूरत से गुफ्तगू भी करते।'' (बुख़ारी 990,991, मुस्लिम 1748)

2) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि '' रात की नमाज़ दो दो रकअतें हैं। फिर जब तू नमाज़ से फारिग़ होने का इरादा करे तो एक रकअत वित्र पढ़ ले, वह तेरे लिए सारी नमाज़ को ताक़ कर देंगी।''(बुखारी 993)

3) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. फरमाते हैं कि ''नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वित्र एक रकअत पढ़ी।'' (इब्ने हिब्बान 681)

4) उम्मुलमोमिनून सय्यदा आइशा रज़ि. बयान करती हैं कि ''बिलाशुब्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात की नमाज़ ग्यारह (11) रकअत पढ़ते थे, उनमें से वित्र एक रकअत पढ़ते थे। जब उससे फारिग़ होते तो दायें करवट लेट जाते। यहाँ तक कि मुअज़्ज़िन आता (और सुबह की अज़ान कहता) तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो रकअत (सुबह की सुन्नते) हल्की पढ़ते थे।''(मुस्लिम 1717)

5) उम्मुलमोमिनून सय्यदा आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि ''बिलाशुब्हा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वित्र की एक रकअत पढ़ा करते थे।'' (सुनन दारकुत्नी स.33 जि.2)

इक़ामत होने के बाद सुन्नते फजर पढ़ना जाइज़ नहीं

1) सय्यदना अबु हुरैरह रज़ि. रावी हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जब इक़ामत हो जाए तो (जमाअत वाली) फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं होती।''(मुस्लिम 1644)

2) सय्यदना अबु हुरैरह रज़ि. बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जब इक़ामत हो जाए तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा और कोई नमाज़ नहीं होती।'' आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गया सुबह की सुन्नते भी नहीं होती? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''सुबह की सुन्नते भी नहीं होती।''(सुनन कुबरा लिलबैहक़ी स.483 जि.2)

3) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन सिरजीन रज़ि. बयान करते हैं कि एक शख़्स मस्जिद में दाखिल हुआ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे। उस शख़्स ने मस्जिद के एक कोने में दो रकअत सुन्नते फजर पढ़ी फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ में शरीक हो गया, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलाम फेरा तो फरमाया ऐ फलाँ! तुमने दोनों नमाज़ों में से किसे शुमार किया? क्या जो अकेले पढ़ी या जो हमारे साथ पढ़ी? (मुस्लिम 1651)

4) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन सिरजीन रज़ि. बयान करते है कि एक शख़्स (मस्जिदे नबवी में) आया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे। उसने दो रकअतें (सुबह की सुन्नतें) पढ़ी फिर फर्ज़ नमाज़ में दाखिल हुआ, जब आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ ली तो फरमायाः "ऐ फलाँ! तेरी नमाज़ कौनसी थी? वह जो हमारे साथ पढ़ी है या वो जो तूने अकेले पढ़ी?" (निसाई सलातुल हदीस 869)

5) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन सिरजीन रज़िअल्लाहु अन्हु बयान करते है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जमाअत कराते हुए देखा कि एक शख़्स (जमाअत से अलाहिदा सुबह की सुन्नत की) दो रकआतें पढ़ रहा है, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ से फारिग़ हुए तो उससे कहा कि "तूने दोनों नमाज़ों में से किस नमाज़ का ऐतबार किया है?" (इब्ने माजा 1152)

फजर की सुन्नतें फर्ज़ों के बाद और तुलूए आफताब से पहले पढ़ना साबित है

1) सय्यदना कैस बिन उमर रज़िअल्लाहु अन्हु बयान करते है कि रसूलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स को देखा जो सुबह की नमाज़ के बाद दो रकअतें पढ़ रहा था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया सुबह की नमाज़ दो रकअतें है! उस शख़्स ने कहा कि मैंने सुबह की सुन्नतें फर्ज़ों से पहले न पढ़ी थीं और उन दोनों को अब पढ़ा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह जवाब सुन कर खामोश हो गये। (सुनन अबू दाऊद 1267, इब्ने माज़ा 1154)

2) सय्यदना क़ैस बिन उमर रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम के साथ सुबह की नमाज़ पढ़ी जबकी उन्होंने सुबह की

सुन्नतें न पढ़ी थी। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलाम फेरा तो वह खड़े हुए और सुबह की सुन्नतें पढ़ने लगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी तरफ देख रहे थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन को उससे मना न किया। (सहीह इब्ने खुज़ैमा सफा 154 जिल्द 2, इब्ने हिब्बान सफा 82 जिल्द 5)

3) इमाम अता बिन अबी रबाह एक अन्सारी सहाबी से बयान करते हैं कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को देखा जो सुबह की नमाज के बाद दो रकअतें पढ़ रहा था। उस अन्सारी सहाबी ने कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैंने सुबह की सुन्नतें न पढ़ी थीं जिन्हें मैंने अब पढ़ा है। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे कुछ नहीं कहा। (अलमहल्ला बिल आसार सफा 154 जिल्द 2)

4) सय्यदना अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल क़ारी रज़िअल्लाहु अन्हु बयान करते है कि मैंने सय्यदना उमर फारूक़ रज़िअल्लाहु अन्हु से सुना वह फरमाते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "जो शख़्स अपनी रात (की नमाज़ के) के सारे हिस्से या उसमें से कुछ हिस्से में सो जाये तो वह फजर और ज़ोहर के दर्मियान पढ़ ले तो गोया कि उसने रात को ही पढ़ी है। (सहीह मुस्लिम 1745)

अज़ाने मग़्रिब के बाद दो रकअत नफ्ल साबित हैं

1) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन नफअल रज़िअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "हर अज़ान व इक़ामत के दर्मियान नमाज़ (नफ्ल) है, हर अज़ान व इकामत के दर्मियान नमाज़ है, तीसरी बार फरमाया जो चाहे (वह पढ़ ले)।" (बुखारी 627, मुस्लिम 194)

2) सय्यदना अब्दुल्लाह माज़नी रज़िअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि नमाज़े मग़्रिब से पहले (नफ्ल) नमाज़ पढ़ो, तीसरी बार फरमाया जिसका जी चाहे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस बात को नापसन्द करते थे कि लोग उसे ज़रूरी समझें। (बुखारी 1183)

3) सय्यदना अब्दुल्लाह अलमाज़नी रज़िअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि बिलाशुब्हा सय्यदना मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़े मग़्रिब से पहले दो रकआत नफ्ल पढ़ी है। (सहीह इब्ने हिब्बान सफा 163)

4) सय्यदना अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब

मुअज़्ज़िन अज़ान कहता तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के सहाबा कराम रज़िअल्लाहु अन्हुम में से बाज़ लोग खड़े होते और मस्जिद के सुतूनों की तरफ़ लपकते। जब आप सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम तशरीफ लाते तो लोग उसी तरह मग़रिब की नमाज़ से पहले दो रकअत पढ़ते और अज़ाने मग़रिब और इक़ामत के दर्मियान कोई ज़्यादा वक़्फा न होता था। (सहीह बुखारी 625)

रकअते तरावीह

1) इमाम अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने सय्यदा आईशा रज़िअल्लाहु अन्हा से सवाल किया कि आप सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की रात की नमाज़ रमज़ान में कितनी रकअतें थी? सय्यदा आईशा रज़िअल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया कि आप सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम रमज़ान और गैर रमज़ान में ग्यारह रकअतों से ज़्यादा न पढ़ते थे, पहले (दो दो करके) चार रकअतें पढ़ते थे उनकी खूबी और तावील का क्या पूछना, फिर चार पढ़ते उनकी खूबी और लम्बे (क़याम वगैरह) का क्या पूछना फिर तीन रकअतें पढ़ते थे। मैं (आईशा रज़िअल्लाहु अन्हा) ने एक बार आप से अर्ज किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम आप वित्र से पहले सो जाते है? आप सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया कि ''आईशा! (रज़िअल्लाहु अन्हा) मेरी आखें सोती है दिल नहीं सोता।'' (बुखारी 2013, मुस्लिम 1723)

2) सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के साथ बाजमाअत नमाज़ (तरावीह) रमज़ानुल मुबारक में आठ रकअत और वित्र पढ़ी।(इब्ने हिब्बान स.64 जि.4 ह.न. 2406, सहीह इब्ने खुज़ेमा स. 137 जि.2, मुसनद अबूआला स.326 जि.2 ह.न.1796, तबरानी सगीर 190 जि.1)

3) सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. फरमाते हैं कि सय्यदना उबई बिन कअब रज़ि. नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के पास तशरीफ लाए और कहा ''ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम! आज रमज़ानुल मुबारक की रात में मैंने एक काम किया है, तो आप सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया कि ''ऐ उबई वह क्या काम है?'' तो सय्यदना उबई बिन कअब रज़ि. ने जवाब दिया कि घर की औरतों ने कहा कि हम आज आपका कुरआन नमाज़ (तरावीह) में सुनेंगीं, चुनान्चे मैंने उनको आठ रकअत (तरावीह) पढ़ाई और वित्र भी, यह सुन कर नबी

करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खामुश हो गऐ और कुछ न फरमाया। (सहीह इब्ने हिब्बान स.111 जि.5 ह.न.2541, मुसनद अबु आला स.362 जि.2 ह.न.1795)

यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के राज़ी होने की दलील है।

इस हदीस को आलिम मुहम्मद यूसुफ कान्धलवी ने अपनी किताब ''हयातुस्सहाबा'' में इस तरह नक़्ल किया हैं:-

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहुअन्हु फरमाते हैं कि हज़रत उबई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, आज रात मुझसे एक काम हो गया हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ उबई क्या हुआ? उन्होंने अर्ज़ किया मेरे घर की कुछ औरतें थी, उन औरतों ने कहा, हमने कुरआन नहीं पढ़ा हम आपके पीछे तरावीह की नमाज़ पढ़ेंगीं। चुनांचे मैंने उन्हें आठ रकअत नमाज़ पढ़ाई और वित्र भी पढ़ाई। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर कुछ न फरमाया। इस तरह आपकी रज़ामंदी की बुनियाद पर यह सुन्नत हुई। (हयातुस्सहाबा स.267, जि.3, छापाखाना इदारा इशाअत दीनियात, दिल्ली)

4) इमाम साइब बिन यज़ीद फरमाते हैं कि सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि. ने सय्यदना उबई बिन कअब रज़ि. और सय्यदना तमीम दारी रज़ि. को हुक्म दिया कि वह लोगों को क़यामे रमज़ान ग्यारह रकअत पढाऐं। (मअत्ता इमाम मालिक स. 98 बैहक़ी स. 496, जि.2)

5) इमाम मुहम्मद बिन यूसुफ फरमाते हैं कि मुझे साइब बिन यज़ीद ने खबर दी कि सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि. ने लोगों को सय्यदना उबई बिन कअब रज़ि. और सय्यदना तमीम दारी रज़ि. पर जमा किया और वह दोनों ग्यारह रकअत पढ़ाते थे। (मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा स.392 जि.2)

नमाज़े जनाज़ा में सूरह फातिहा की क़िरअत

1) हज़रत अबु उमामह बिन सहल रज़ि. से रिवायत है कि ''नमाज़े जनाज़ा में सुन्नत तरीक़ा यह है कि पहली तकबीर कही जाए, फिर फातिहा पढ़ी जाए, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद और मय्यत के लिए दुआ (की जाए) इसके बाद सलाम (फेरा जाए)।'' (मुसन्निफ अब्दुल रज्ज़ाक़ 6428)

2)हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह बिन औफ रज़ि. कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने

अब्बास रज़ि. के पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो आपने सूरह फातिहा पढ़ी, और फरमाया "मैंने यह इसलिए किया ताकि तुम जान लो कि यह सुन्नत है।"(बुख़ारी 1335)

3) सय्यदना इब्ने अब्बास रज़ि. कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाज़े की नमाज़ में सूरह फातिहा पढ़ी।(इब्ने माजा 1495)

4) सय्यदना जाबिर रज़ि. बयान करते हैं कि हमारे जनाजों पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चार तकबीरें कहते थे और सूरह फातिहा की क़िरअत पहली तकबीर में करते थे।"(मुस्तदरक लिल हाकिम स.358 जि.1)

औरतों का मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना

1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "जब तुम्हारी औरतें मस्जिद की तरफ जाने की इजाज़त मांगें तो उसे हरगिज मना न करो।" (बुख़ारी 873, मुस्लिम 442)

इससे मालूम हुआ कि हर मस्जिद में ख्वातीन के लिए,नमाज़ पढ़ने का हर मुम्किन इन्तिज़ाम होना चाहिये।

2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमायाः "तुम अपनी औरतों को (नमाज़ पढ़ने के लिए) मस्जिद आने से मना न करों, अगरचे उनके घर उनके लिए बेहतर हैं।" (अबू दाऊद 567)

3) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "जो औरत मस्जिद में आना चाहे वह खुशबू ना लगाए।" (मुस्लिम 443)

4) उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आइशा रज़ि. राविया हैं कि "मोमिनों की औरतें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ती थी, चादरों में लिपटी हुई और जब नमाज़ पढ़ कर अपने घरों को आती थीं तो उन्हें कोई शख़्स अन्धेरे की वजह से पहचान नहीं सकता था।"(बुखारी 578, मुस्लिम 1457)

एक हाथ से मुसाफह करना

1) अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को उस बीमारी में देखकर बाहर आये, जिसमें आपने वफात पाई तो लोगों ने आपसे पूछा "ऐ अबू हसन (अली रज़ि. की कुन्नियत) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुबह किस हाल में की है। उन्होंने कहा, अल हम्दुलिल्लाह आपने सुबह अच्छे हाल में की है। फिर अब्बास रज़ि. ने उनका हाथ थाम लिया।"(बुखारी 2/927)

2) हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जो दो मुसलमान आपस में मुलाकात करें और हर एक इन दोनों में से अपने साथी का हाथ थाम ले और अल्लाह की हम्द (तारीफ) करे तो वह दोनों साथी इस हालत में जुदा हुए कि दोनों के बीच कोई गुनाह नहीं रहा।"(मुसनद अहमद 4/291)

3) अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया "तुहफए सलाम हाथ थामने से पूरा होता है। (तिर्मिज़ी 2/97)

4) साबित बुनानी रह. फरमाते हैं कि "जब सुबह होती हज़रत अनस रज़ि. अपना हाथ खुशबूदार बनाते, अपने (मुसलमान) भाइयों से मुसाफ़हा करने के लिए।" (अलअदबुल मुफरद 2/482)

5) हज़रत अनस रज़ि. कहते हैं कि "मैंने कभी कोई खज (रेशम की एक क़िस्म है) और रेशम का कपड़ा ऐसा नही छुआ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की हथेली मुबारक से नरम और नफीस हो।"(मुस्लिम 2/257)

हदीस में हथेली का ज़िक्र हुआ है ना कि हथेलियों का, इससे साबित हुआ कि हज़रत अनस रज़ि. ने एक हाथ से ही मुसाफहा किया है।

6) साबित बुनानी रह. कहते है कि मैंने हज़रत अनस रज़ि. से कहा "आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का हाथ मुबारक अपने हाथ से छुआ है। हज़रत अनस रजि. ने कहा "हाँ"। साबित बुनानी ने कहा "मुझे वह हाथ दिखायें मैं उसे चूम लूं।"(मुसनद अहमद 3/111)

नमाज़ में जायज़ काम

1) सय्यदना अबू क़तादा रज़ि. फरमाते हैं " बिलाशुब्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी नवासी उमामा को उठा कर नमाज़...........जब सज्दा करने लगते तो उसे ज़मीन पर बैठा देते और जब खड़े होते तो उसे उठा लेते।"(बुख़ारी 516, मुस्लिम 543)

2) सय्यदा आइशा रज़ि. फरमाती हैं "मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने लेटी होती और मेरे पांव आपके क़िब्ले वाली जगह होते, जब आप सज्दा करने लगते तो मुझे दबा देते, तो मैं अपने पांव इकटठे कर लेती।"(बुख़ारी 382, मुस्लिम 512)

3) सय्यदा आइशा रज़ि. फरमाती हैं "मैंने दरवाज़ा खटखटाया, जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नफ्ल नमाज़ पढ़ रहे थे और दरवाज़ा उनके क़िब्ले की सिम्त था, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने थोड़ा सा दायां चल कर या बायां चल कर दरवाज़ा खोला और फिर अपने मुसल्ले पर लौट आए।"(निसाई 1207)

4) सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. फरमाते हैं "मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बाँये जानिब खड़ा हो गया, तो आपने मुझे पकड़ कर अपनी दायें जानिब खड़ा कर दिया।"(बुखारी 697, मुस्लिम 184-763)

5) सय्यदना जाबिर रज़ि. फरमाते हैं "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम नमाज़ के लिए खड़े हुए, मैं आया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बायें जानिब खड़ा हो गया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ा और घुमाकर अपने दायें जानिब खड़ा कर लिया, फिर जब्बार बिन सखर रज़िं. आए, उन्होंने वुज़ू किया और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बायें जानिब खड़े हो गए, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हम दोनों के इकटठे हाथ पकड़े और हमें धकेल कर अपने पीछे खड़ा कर दिया।" (मुस्लिम 3010)

नोटः- जो लोग मस्ज़िद में अपना मोबाइल बन्द करना भूल जाते हैं और दौराने नमाज़ उनके मोबाइल की रिगं बज उठती है वह लोग इन हदीसों की रोशनी में अपना मोबाइल बन्द कर सकते है।

तक़लीद का रद्द

इमाम मालिक रह. (पै. 93 हि. व. 179 हि.) के फरमान से तक़लीद का रद्द

"नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद जो कोई भी शख्स है उसका क़ौल तस्लीम भी किया जा सकता है और रद्द भी, सिवाए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के (आपके फरमूदात किसी भी सूरत में रद्द नहीं किए जा सकते)।" (जामे बयान 2/91)

"मैं महज़ एक इन्सान हूँ ख़ता व दुरस्तगी का पेकर हूँ चुनान्चे मेरी रायों पर नज़र कर लो हर वह चीज़ जो किताब व सुन्नत के मुवाफिक़ हो उसे ले लो और हर वह हुक्म जो शरीअत के मुवाफिक़ न हो उसे छोड़ दो।"(एलामुलमुवक्कईन 1/63)

इमाम शाफई रह. (पै. 150 हि. व. 204 हि.) के फरमान से तक़लीद का रद्द

"जब मैं कोई मसअला बताऊं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे मसअले के खिलाफ फरमाया हो तो जो मसअला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस से साबित हो वह ऊला है। ख़बरदार ! तुम मेरी तक़लीद न करना।"(अक़्दुल जय्यिद)

"मेरा मज़हब ही सहीह हदीस है जब तुम मेरे कलाम को हदीस के ख़िलाफ पाओ तो हदीस पर अमल करो और मेरे कलाम को दीवार पर मारो।"(अलमजमूआ जि. 1 स.63, मीज़ान 1/57)

"ऐसा कोई शख़्स नहीं जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बाज़ हदीसें मख़्फ़ी (छुपी) और पोशीदा न रही हो इसलिए जब मैं कोई नात कहूं या कोई ऊसूल बयान करूं और उसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मेरा क़ौल या ऊसूल ख़िलाफे मन्कूल हो तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही का क़ौल लिया जाऐगा और वही मेरा भी क़ौल होगा।"(तारीख़ दमिश्क़ लिइब्ने असाकिर 15/1/3, ऐलाम 2/363)

इमाम अहमद बिन हम्बल रह. (पै. 164 हि. व. 241) के फरमान से तक़लीद का रद्द

इमाम इब्ने जोज़ी रह. फरमाते हैं कि इमाम अहमद बिन हम्बल रह. फरमाते थे

लाने और आप सल्लल्लाहु लअैहि वसल्लम की शरीअत पर अमल करने को वाजिब किया है।"(क़ौले सदीद 3)

हनफियों की मौअतेबर किताब मसबूत से रद्द "अगर तक़लीद जायज़ होती तो अबू हनीफा रह. से पहले जो लोग थे मसलन हसन बसरी और इब्राहीम नखई रह. उनकी तक़लीद किया जाना ज़्यादा मुनासिब था।"(मसबूत स. 28, जुज़ 12 मिस्र)

तक़लीद के सिलसिले में उलमाअें किराम के अक़वाल

अल्लामा इब्ने क़य्युम रह. फरमाते हैं "तक़लीद की बिदअत चौथी सदी हिजरी में पैदा हुई जिस सदी की मज़म्मत नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ने अपनी ज़बाने मुबारक से फरमाई है।"(एलामुल मुवक्क़िईन 2/138)

अल्लामा इब्ने कसीर रह. सूरह अहक़ाफ की आयत 11 के तहत लिखते हैं "अहले सुन्नत वल जमाअत का मज़हब यह है कि वह कहते हैं कि हर वह क़ौल और फैल जो सहाबा किराम रज़ि. से साबित न हो वह बिदअत है क्योंकि अगर यह ख़ैर होता तो हम से पहले वह इस पर अमल कर गुज़रते इसलिए कि वह हर ख़ैर और भलाई की तरफ जल्दी करने वाले थे। अगर तक़लीद ख़ैर का अमल होता तो सहाबा किराम रज़ि. ने अपने लिए मज़हब सिद्दक़ी, उमरी, उस्मानी वग़ैरह के नाम से क्यों इख़्तियार नहीं फरमाया?" (तफ्सीर इब्ने कसीर)

शाह इस्माईल शहीद रह. एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं " किसी एक मुजतहिद की तक़लीद को वाजिब और लाज़िम समझना बिदअत हक़ीक़ी है और जो लोग इसके लिए बेजा उज़्र पश करते हैं तो उससे भी तक़लीद हुक्मे बिदअत से खारिज नहीं हो सकती बल्कि फिर भी बिदअत है।" (इज़ाहुल हक़्कुल सरीह 180)

अल्लामा शोकानी रह. फरमाते हैं "तक़लीद ख़ेरूलकुरून में बिल्कुल नहीं थी न ही वह लोग तक़लीद जानते थे और न ही उन्होंने तक़लीद के बारे में कुछ सुना था बल्कि उनका तरीक़ा यह था कि अवाम उलमा किराम से कुरआन व हदीस की रोशनी में पूछते और उलमा उन्हें कुरआन व हदीस ही की रोशनी में जवाब देते और यह तक़लीद का नहीं बल्कि उन उलमा से हुज्जत शरई तलब करता है और अल्लाह तआला का हुक्म मालूम करता है जबकि तक़लीद का जवाज़ ही साबित नहीं होता तो वजूब तो दूर की बात है कि हम जवाब देने की ज़रूरत महसूस करें।"(इरशादुल फुहूल 445,446)

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत को तर्क किया वह गुमराह हो गया।'' (मीज़ान जि. 1 स.48)

इमाम अबू हनीफा रह. के शार्गिदों के क़ौल से तक़लीद का रद्द

इमाम अबू युसूफ रह. फरमाते हैं ''किसी आदमी कि लिए यह जायज़ नहीं है कि वह हमारे क़ौल की दलील मालूम किए बगैर फतवा दे।'' (इक़ाज़ 52)

इमाम मुहम्मद रह. का फरमान ''अगर इमाम अबू हनीफा की तक़लीद जायज़ होती तो वह लोग तक़लीद के ज्यादा हक़दार थे जो पहले गुज़र चुके हैं मसलन हसन बसरी और इब्राहीम नखई (इमाम नखई इमाम अबू हनीफा के उस्ताद थे)।'' (इक़ाज़ 52)

इमाम ज़फर रह. का फरमान ''हम राय को उस वक़्त अखज़ करते हैं जब हमें हदीस नहीं मिलती और जब हमें हदीस मिल जाती है तो हम अपनी राय को छोड़ कर हदीस पर अमल करते हैं।'' (इक़ाज़ 52)

हनफी उलमओं के बयान से तक़लीद का रद्द

मुल्ला अली क़ारी हनफी रह. फरमाते हैं ''यह तो ज़ाहिर है कि अल्लाह ने किसीको भी इस बात का मुकल्लफ नहीं किया है कि वह हनफी, मालकी, शाफई, या हम्बली बने बल्कि सबको इसका हुक्म दिया कि सुन्नत के मुताबिक़ अमल करें।'' (शरह ऐनुल इल्म)

हाफिजुलफिक्ह हबीबुल्लाह हनफी रह. फरमाते हैं ''तक़लीद शख़्सी वाजिब न होने पर उम्मत का इज्माअ है।'' (अलमुगतनमुल हसूल)

तक़लीद का रद्द हनफी किताबों से

मुस्लिमुस्सबूत से तक़लीद का रद्द ''वाजिब वही है जिसको अल्लाह ने वाजिब किया है, पस यह किसी पर वाजिब नहीं किया कि किसी ख़ास इमाम ही के मज़हब पर चले।'' (मुसल्लमुस्सुबूत जि.2 स.355)

''हमारे आइम्मा (अबूहनीफा रह. अबू यूसुफ रह., इमाम मुहम्मद रह.) से मरवी है उन्होंने कहा कि किसी को हमारे क़ौल पर उस वक़्त तक फतवा देना जायज़ नहीं जब तक उसकी दलील न मालूम कर ले कि हमने कहाँ से कहा है।'' (जि.2 स.353)

अलक़ौले सदीद फी इसबाते तक़लीद से तक़लीद का रद्द ''मालूम होना चाहिए कि अल्लाह ने अपने बन्दों में से किसी को इस अम्र का मुकल्लफ नही किया कि वह हनफी, मालकी, शाफई या हम्बली बने बल्कि उन पर मनहजे मुहम्मदी पर ईमान

कि "न मेरी तक़लीद करो न इमाम मालिक की न इमाम औज़ाई और न इमाम सूरी की तक़लीद करो बल्कि जहाँ से इन्होंने मसाईल अखज़ किए हैं तुम भी वहाँ से लेना (कुरआन व हदीस से)।"(मनाक़िबुल इमाम अहमद 192, इक़ाज़ 113)

"अल्लाह और उसके रसूल (कुरआन व हदीस) के होते हुए किसी (उम्मती) का क़ौल कोई चीज़ नहीं है।"(अक़दुल जय्यिद)

एक बार इमाम अहमद ने तक़लीद पर अपने तअज्जुब का इज़हार इस तरह फरमाया "मुझे उन लोगों पर तअज्जुब है जो हदीस की सनदों को और उसकी सेहत की मअरफत के बावजूद सुफियान सोरी की राय की तरफ रूख़ करते हैं जबकि अल्लाह तो यह फरमाता है कि "जो लोग हुक्मे रसूल की मुख़ालिफत करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफत न आ पड़े या उन्हें दर्दनाक अज़ाब न आ पहुँचे।"(सूरह नूर 63)

"जिसने हदीसे रसूल को ठुकराया वह हलाकत के दहाने पर है।"(मनाक़िब इमाम अहमद बिन हम्बल 186)

इमाम अबू हनीफा रह. (पै. 80 हि. व. 150) के फरमान से तक़लीद का रद्द

"जब तुम हमारे क़ौल को कुरआन व हदीस के ख़िलाफ पाओ तो उन्हे दीवार पर दे मारो और कुरआन व हदीस पर अमल करो।" (मीज़ानुश्शिरानी 1/54)

"लोग हमेशा हिदायत पर रहेंगे जब तक उनमें हदीस के तलबगार होंगे जब हदीस छोड़ कर और इल्म तलब करेंगे तो गुमराह हो जाएेंगे।"(मीज़ानुश्शिरानी 1/54)

"जो बात सहीह हदीस से साबित हो वही मेरा मज़हब है।"(अक़दुल जय्यिद)

"जिस शख़्स को मेरी दलील न मालूम हो, उसे मेरे क़ौल से फतवा देना मुनासिब नहीं।"(अक़दुल जय्यिद)

इमाम अबू हनीफा रह. फरमाते हैं कि जब मेरा क़ौल कुरआन के ख़िलाफ हो तो उसे छोड़ दो। आपसे पूछा गया कि जब आपका क़ौल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस के ख़िलाफ हो जाए? फरमाया हदीस के मुक़ाबले में भी मेरा क़ौल छोड़ दो पूछा गया कि अगर आपका क़ौल सहाबा किराम के इरशादात के ख़िलाफ हो? फरमाया सहाबा किराम के फरमान के मुक़ाबले में भी मेरा क़ौल छोड़ दो।"(अक़दुल जय्यिद 45)

"अल्लाह के दीन में क़ौल व राय पर अमल से बचो क्योंकि जिसने नबी

हमारी दअवत

कुरआन	सही हदीस	सल्फ सालेहिन की समझ
اتَّبِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ	وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانتَهُوا	وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا
(लोगों) जो (किताब) तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नाज़िल हुई उसकी पैरवी करो। (अल आराफ़:3)	सो जो चीज़ तुम्हें पैगम्बर दें वो तुम ले लो और जिस से मना करें (उससे) बाज़ रहो। (अल हश्र: 7)	और जो शख्स सीधा रास्ता मालूम होने के बाद पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुखलीफत करें और मोमिनों के रास्ते के सिवा, दूसरे रास्ते पर चले तो जिधर वो चलता है हम उसे उधर ही चलने देंगे और (कयामत के दिन) जहन्नम में दाखिल [illegible] और वो बुरी [illegible] है।

आपका भाई मो हुसैन